A.C. Joshi Library
P.U. Chandigarh

MSS No. 362 Subject

Name of MSS पिंगल रामदास कृत वृत्ति

Author

Period Folios 26.

Script Devnagiri Source Prithipal Singh.

Missing Folios

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पिंगल [illegible]

[illegible]

1B

A. NO. 362.

362

362

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

Hindi Ms.
4 H 6
P653
362

पिंगलरामदासकृत वृत्ति ; खंडित
असं० पत्राक ॥ ल० म० २८ पं०प्र०पृ०

ह० ला०

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

No. 18

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१८७

१८८७ तैतरय जीगंगा [illegible] | [illegible]नी ३ आगर राय जीरवाला

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

[illegible] [illegible] १८५६ [illegible]

१८५४ सं. १९१३ [illegible]

१९०१ सं

१९०५ सं [illegible]

१९०७ सं

१९०८ सं

१९११ सं [illegible]

१९२१ १९१२

१८५५

१८५५

१९०१

१९०५

१९०७

१९०८

१९०९ [illegible]

[illegible]

१९१०

१९११

Pingal Ram Das Krit

in Hindi

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

वात जेतेयाहष्टांतकी क्रियामध्यरमताने वर्णनी
यकीनरसतायहक विजन तठवदान ।।
विमुखअर्थयह विगैमुखकहा कि शिरविनहोत
यातेविमुखविलातहैंनशिरहैंअर्थउदोत

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

A. no. 362

ॐ

श्रीगणेशायनमः श्रीमद्रामचंद्रायनमः ॥ श्रीमद्धनूमतेनमः॥ राम॥

तीनोलोकपति॥ प्रथमस्लोकअर्थमैतीनोलोकनमैवाक्यपूर्वा

करकेकेपविशेषनदेनेकरकेअपुनरुक्तदोषभासेहै॥ पोते

ऐसेअर्थकरनो॥ कितीनोलोकमैजोक्रियापदहै तिनसौंपूर्वजो पूर्वे

विशेषनहै॥ सोसमस्तअभिप्रायहै अरुभिन्नभिन्नअपनीअपनी

क्रियाकरअन्वितहै॥ जोवाक्यपूर्वक्रियाताकौंलागेजोविशेष

नहैं॥ सोपूर्ववाक्यअन्वयिनहीहै॥ कित्पश्चात्वाक्यान्वयिहै॥ पोते

भिन्नभिन्नरूपविशेष्यान्वित॥ भिन्नविशेषणहोणतेसमासप

नरूपादानदोषनही॥ यथा॥ इननमनीयविशेषणकरकेवि

प्रे. शिष्टजोश्रीरामजीहैतिनकोंतौंनमस्कारकरतहै॥ जोतीनो

लोककेस्वामीहै औरऐसेऐश्वर्यवानकोप्रणामकोजोगपताअव

श्यहै॥ जोकोऊकहैकिऐसेप्रणामकोकहाफलहै जोउनकोंड

वरभीनही तहांकहैहै प्राणपति प्राणोकेभीस्वामीहै॥ वयाअं

तर्यामीहै॥ उहांप्राणयतिलिंगदेहकोउपलक्षकहै॥ तांतेपंच

प्राणपंचज्ञानेंद्र पंचकर्मेंद्रिय मन औरबुद्धि इनकेस्वामी

जानीए॥ जोकहौकिइतनेवडेराजाकोएकतुच्छमनुष्यले

प्रणामकीयेतोकहाउनकोप्रसन्नताहोगी॥ याअंदेसेकोदूर

करवेकोकहैहै प्रीतिदोतोरति॥ जोकोईप्रीतिप्रणामकिकरैहै

ताओरतिसनेहकरतहै॥ जोकहौतुमउनपेकैसेपोहचोगे॥ तो

आगतनगतिदया जिनकोगतपोहचनहीतिनकीवहीगतहै

[illegible]औरे[illegible]रजोगुणप्रधानमूर्ति सत्वगुणप्रधानमूर्तिऔरसे

[illegible]कै इनसाधुकेवेगोकरविशिष्ट बर

जोरामहैतिनकेगुणगायहै॥ जोसदाशीलयुक्तहै॥ औरऐसे

सकेपतहै औरराक्षसनारके[illegible]॥ शिवहनकरिकेजोतरही

महाराजकोनमस्कारकरै॥ क्र८

2

और येजो हैं तिनकौ भी पुजि है॥ इन दून्हूनकौ करके शुद्ध सत्व प्रधान
ता॥ और सद्वृत्त प्रधानता दिखाई है॥ अज्ञानो धकार रूपत
मोगुणाको अभाव श्रीरामचंद्र में व्यंजना कीयो॥ सरसो देवतान
के पतजो ब्रह्मा विष्णु महेस तिनके भी पति क्या रचना करै है॥ पाती
पा निपति। यानीतें एसमदारो यर्थता स है तजो राम है तिनके नेत्रां की
जो कोरता की और ख्या कृपादृष्टि के सन्मुख कभी में हूं पर जाय
तो॥ अथवा एसेजो श्रीराम हैं तो मेरे नेत्रों के सनमुख एकान दूस्य
वरूप परो॥ क्योंक आपने गुणासन के जनमें अन्न होइ है॥ अथवा॥
रामनैन कोर ओर कबहूं तो परजाय है॥ राम नेत्र कोर की
ऐसे वा विजोग्य थकती है सो भी परजाय यह होय॥ केर कहत हैं कु
रवा वयनता यहजो मेरो वाक प्रतिका वाणी है सो फुरे वचा निश्चे
सफल होय॥ सुनो संत साधुमत सुनो है संत जनो साधुमत को अर्थ
अपनो बुद्धको साधके॥ स्थिर करके॥ अथवा सुनो हे संत मनो
यह मेरो साधनता अष्ट मत क्या परत तव ऐसे रघुपति के कछू
का गुणगाय है॥ ते पूर्ण गुणगाण तो मनुष्य को असंभव है॥
कछूएक गुणगान करहै॥ अथवा॥ समाप्त पुनरुपादान को
उदाहरण ऐसो कीजीए॥ किइन तीनो सलोकमें वाणिने तीन प्र
कार के मंगल कीये है॥ यांते भिन्न भिन्न कीया है॥ प्रथम सलोक
पृ मै वस्तुनिर्देशाख्य है॥ यह इष्टदेवनति रूप नमस्कारात्मक मं
गलाचरण है॥ दूसरी स्तुकमैं जसदुसन्ना यहै॥ यह अपने इष्ट
देव के गुन कथन पूर्वक स्मरणरूप वस्तु निर्देशात्मक मंगा
ला... चरण दिखायो है॥ और तीसरी सलोकमैं ई प्रकार कोजो
आशीर्वादात्मक मंगल है सो दिखायो है॥ यथा॥ आशी
र्वादात्मक मंगल है प्रकार है॥ एकतो स्वनिष्ट। स्यायद॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इष्टदेवतें अपने आपको कल्यानादिकी प्रार्थना करै ॥ यथा
देहु बुद्धि वरदान ॥ दूसरो परिनिष्ट ॥ जो अपने इष्टको सर्वो
त्कृष्टता कहिके वांछित निरूपण करै ॥ सो इहां पहले अर्ध
मैं तो यह कह्यो कि सरस्वतीनके पति जो श्री रामचंद्र हैं ति
नकी कृपा दृष्टि के लेस मात्र मैं परजायौं ॥ यह तौ निष्ट आशीर्वा
दात्मक मंगल भयो ॥ और दूसरे अर्ध मैं व्रह्मादिनके स्वामी
भए और जानकीजी के महत जो श्री रामचंद्र हैं तिनकौं मैं व
न्दौं ॥ यह कहनेते परनिष्ट आशीर्वादात्मक मंगल भयो ॥
ऐसे तीनों रूकमैं तीन मंगल दिखाये हैं सो घन्न ही ॥ और या
कवित्त मैं अनुबंध चतुष्टै भी दिखाये हैं ॥ जैसे रघुपत के क
छुक गुन गाय हौं ॥ यह तो रामकथा रूप विषय कह्यो है ॥
और रसनो संत या मैं संतजन अधिकारी दिखाये हैं ॥ और रा
मनेन कोर डोरक वह तौ परजाय हौं जामैं श्री रामजी की
कृपा दृष्टि रूप प्रयोजन निरूपण कियो है ॥ और विषय को प्र
रूप प्रयोजन को प्रतिपाद्य प्रतिपादकभाव से संबंध दिखायो
है ॥ १ ॥ अब ग्रंथ कवित्त मैं तीनो मंगल करके आगे जो को
ऊ कहै कि काव्यके आदि मैं उचित देवता सरस्वती अथवा विघ
नाशक गणेशजी इत्यादिक देवताजन को ग्रंथ के आदि मैं
सब मंगल करते आए हैं ॥ तुम मैं क्यों न सो कीयो या आ
शंका के दूर करबे को सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं श
रणं व्रज इत्यादि वाक्यानुसार अपनी अनन्य भक्ति
जितावत हुए एक राम नाम स्मरण से सर्व देवतान की
प्रसन्नता की सिद्धी निरूपण करके ने को कहै हैं ॥ २

राम राम राम राम राम राम राम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

3

काहूके मिंता काहूके तो मारस्वली वंरपूर्ण करत है ॥ रूकाहूके पेशेव
है सेवर दैया कहा दात है ॥ और काहूके चतुरानन ब्रह्मा को घर है
तो रचे ई तो सो गगजानन गा[illegible]सी आशी में वहे याकहा व[illegible]हे ॥
मेनेयेश न देवता कान न ते सुने है ॥ पै काहू सो पहचानन नहीं करी
कहा उनको रजा अर्चना कबहू नहीं कीनी ॥ याते वे कबहो
पै मल्हम सो मे गे ॥ माये कहत हैं कविराम हृदराम कवि कहै
या दया ॥ जानत हो मै एक श्रीराम के नाम को ॥ जिस नाम
को सन के रस भ सदैया नाम सदा यकरतत है ॥ याते श्रीरा
मजी को ते न काल करनो मो को उचत है ॥ १ ॥ कोई याको
अर्थ ऐसे भी करत है ॥ कि काहू के मारस्वाति नै भी वरपूरण
कीए है ॥ अर्थात नहीं का कुकर ॥ अर्थ(वा) नकार की सर्वत्र
अन्वय करवा सी अर्थ करनो ॥ कि ये देवता काहू के मनोर्थ
पूर्ण नहीं करत है ॥ आगे कान सुने ॥ इन देवता न मोवर
पूरण होते मैं ने कान न सुने हैं ॥ परन्तु पह(चा)नन न काहू
सों ॥ इन मै ते काहू सों कहा किसी एक देवता सो भी वर
पूर्ण होते मैं ने न कहा कहा देखे नहीं ॥ और साच कहे कवि
राम ॥ सत्य कहत है ॥ कहा परीक्षा करकहत है कवि राम
कहै या ॥ रामचंद्र जी की जो है या वार्ता ॥ कहै या यह एक
पनीया को अपभ्रंश है ॥ याते इनको मे [illegible]कर नो नि
स्फल है ॥ तासों निश्चै कर जानत हो ॥ मे श्री राम ना
म को जानत ॥ श्री रघुवीर के नाम हि ॥ जानपद सेवोय
ना ॥ हे श्रोतारजन ॥ तिन्हा सो रघुवीर के नाम है ॥ जा
सन एक हा जिस के नमस्कार करते सम यो यस दैया
कहा सम नकार की महैया स त्यसत्ता होत है ॥ ० ० ॥

नहो मैसेही

पहचाने

इनदोनोंअर्थोंमेंअन्यदेवतानकीअप्रसन्नताडोरअपमानताप्रतीतहो
तहै॥ यातेयाकोएहभीअर्थकरतेहैं किंयाकोईअन्यदे
तानसोभीमनोरथपावेहै॥ तैसेश्रीरामहीसोपावैहै॥ ऐ
सेऽऽतताजोमैकह्योहै॥ लभतेचततःकामान्मयैवविहिता
न्हितान्॥ औरब्रह्माविष्णुरुद्रादिदेवदेवता
पा आश्रित्याध्यागतः सर्वेत्वमेवरघुनंदन॥ औरस
र्वदेवनमस्कारः केशवंप्रतिगच्छति॥ याआशेकोअ ५
करकेकहतेहैं॥ हेमहाराजतेरेअनेकरूपहैं अनन्तरूपकि
हैजिसजिसरूपकरभक्तजनध्यानकरेहैं तिनतिनकरउन ही
केमनोरथपूरणकरोहो॥ काहूकेसारस्वतीवरद्धूएका
हूकेसारस्वतीरूपहोकेवरपूरणकरोहो॥ अपुन॥ का
हूकेसारस्वतीकोरूपनवलसेऐसेहीआगेसमझनो॥
कोऊगजाननआसवसैयाकोऊजोभजतहैसोगजानन आसयद
आस॥ क्यागजाननहूंकैं॥ वसैयाकानमवसायेहै॥ आसउप
देखनेघातकोरूपहै येसमतेरेहीरूपहैमैंमैकाननहूने
हैं॥ येमेरेचित्तहानउनमेंनहीहै॥ श्रीरघुवीरकेनामहजा
नतहैं॥ याम्रोएरूसमसहायकहोतेहै॥ जैसेस्वामीतुल
सीदासजीनेकह्योहै॥ तुलसीमसहकतवनमेंधनुषवान
लेऊहाथ॥ अथ॥ श्रीरामजीकीसर्वोत्कृष्टताकरके
स्तुतिकरेहै॥ काहूकै॥ औरदेवताकाहूकाहूअपनेभ
क्तकीसहायताकरतेहैं॥ श्रीरामपरमात्माविश्वंभरसंपू
र्णजगतकोपालनकरतेहैं॥ सारस्वतीकाहूकेवरपूरेकी
येहैं॥ हमकैनहीचौंसेतीदोनोंलककलगामजी आगेए
हमदेवतामेंकाननहूनेकिकाहूकाहूकोवरदेतहै॥ या
हीतेउनसोपहचाननहीकीनी क्योंपांतहोंकछतप
जपनहीकीयो जोऔरदेवताबरदेस॥ श्रीरामचंद्रजीके
नामकोंजानतहैं॥ किवेपतितपावनहैं॥ जासुनीएजाको
सुनीयतहैकिसबलोकहै॥ यासमवेसहायकहोतेहैं विश्व
भरहैं॥ अपनेसनेहकोकविकहतहैं॥ २॥ २॥:

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

4 स्याम घन इति ॥ स्याम घन रूप जो श्रीरामचंद्रजी को देह है ॥ तां
तामें मन चातिक ज्यों ने सनेह बांध्यो है ॥ जैसे चात्रक स्वाति
ह को चाहत है । तैसे मेरे प्रेम बढ्यो चाहत है ॥ देहु मोको प्रेम की
बूंद क्यों जैसे चात्रक पीउ पीउ रटत है ॥ तैसे मेंभी जपैं पर ताही
नाम कौं ॥ श्रीरामनाम ही के जप करत रहौं ॥ और चरण
सरोज श्रीरामचंद्रजू के जो चरण है सोई भए सरोज कमल
कैसे हैं रससौं भरे है ताकि तिनको मैं अलिक ता भमर भयो हो ॥
उत जा हि नूपराग पाउं [illegible] कहा चरणकमल की पराग कहा रज
ताहि ना पाउंगो ॥ पाउं ताही । छिन का मन कौं ॥ ना हीं छिनच
काम पने जो मन कौ स्वभाव है तिन को प्राप्त होउंगो ॥ ईहां पांउ पद दे
हरि दीपक है ॥ रामचंद्रजी के मुख से धुन सुन चे कोतासी दि
न मनजागृत मान भयो हो ॥ अथवा ॥ रामराम यह जो मुख ध्वनि
है । कहत उत्तम शब्द है ॥ सुन कहा ताके सुनवे को मन के सीघ्र
कृत धाराई है ॥ एक तो अपने प्रान न तो भी भीय राम नाम को
जानत है ॥ दूसरे जहां कहूं रामध्वनि होत है ॥ तहां सीघ्र
भाजके स्रवण को जात हौं ॥ ओडन को रूप समुद्र समता में
मैं मीन समय भयो हो ॥ और काल रूप धूप सो न डरत हो ॥
और वे श्रीरामउदार राजा है ॥ में भिखारी सो ॥ भगत की री
झ मागत हौं ॥ वे श्रीरामचंद्र रघुचंद्र माहै राम कवि को मन च
कोर दूर रहयो है ॥ ३ ॥ सेवक कहै इति ॥ राम सा श्रीराम की
प्रतिपादिक है ॥ पद दिखावत है ॥ ह्वै च ॥ दोवं जो है शिवम
त सो या हीर रघुवीर कों शिव कहत है ॥ राम वेद पढे या कहा वेदा
न्त सास्त्र वारे । राम को यह अभिप्राय कि जितने एक जीव ना
ना जीव भ्रमादिक हैं ॥ सो राम इन को वस कर कहत है ॥
और एक बौद्ध कहत है एक धर्म रूप करके एक कर्म रूप कर
के कहत है ॥ यह दो मीमांसक है । कर्म को अर्थ यज्ञादिक ॥ ध
र्म को अर्थ पदार्थ इन से उपज्यौ पुन्य और एक धाम वास
र हके [illegible] है या क्या संज्ञा यह कहत है ॥ अथवा ॥ राम:

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

के कु
धर्म कहैं हैं धाम सहैया॥ ए धर्म रूप कहत हैं॥ कैसो धर्म हैं॥
जो धाम सहैं याका हाशरी को सहाय करैं॥ क्यों हमशरी-
र के संग धर्म ही रहत है॥ एक कर्ता कहै हैं॥ एक हरता कहै हैं
एक कहत है घट घट में प्रान संभावन वारे हैं॥ कहा जगत के
पालन कारे हैं॥ ब्रह्मा विष्णु रुद्र रूप है पीछे शिव पद परब्रह्म
को वाचक है॥ सो जो मधुराम है अपनो जस सुनत है॥ हे राम
ध्यो सुन दौरहुने या॥ राम ध्यो सुन कहा समर्द्दिशा में मजुग
न दौर दौर के सुनैया सुनावन वारे हैं॥ वे श्रीराम सब कीरतन
नहैं॥ अथवा समर्दिशान के दौर में में... अस जल सैंया
कहा सुनावन वारे हैं॥ अथवा॥ और अर्थ॥ श्रीरामचंद्र ब्र-
ह्म ब्रह्मादिक उनके कारन हैं॥ सो कहत हैं॥ शैवक हैं शिव
पार्वती रहत शिवजो हैं सो भी पार्वती के शैव कहै॥ औ ब्र-
ह्मा को भी कहैं हैं शैवक शैवक या को ... अन्वय स-
वैत्र करनो॥ राम वेद पढैया॥ यह ब्रह्मा को विशेषन है॥
जो धर्म कहैं॥ इक कर्म कहैं॥ इक जो मनु हैं कर्मन के बोध कहै॥
उपदेश कर्त्ता है॥ एक धर्म कहै॥ एक को धर्मराज कहै है॥ ...
म सहैया॥ एक तेजरूप सहाय ... है॥ कौन रूप्य क्यों तेज सो
राम की सहायता करै है॥ अथवा धाम सहैया नाम मंद-
न को सहायक बनावनवारे विश्वकर्मा है॥ एक को कर्त्ता
एक को हर्त्ता॥ एक को चरम्रान वसैया कहा रक्षा करत
हैं॥ ब्रह्म विष्णु रुद्र इन को रूप न है॥ पीछे जो शिव औ ब्र-
ह्मा कहै हैं सो शिवजी शैवक मत का कहै है ब्रह्मा वेद पढन
वारे कहै हैं जैसे का... के है कारन अधीन होय सो इनको है
न नां कहै॥ तम प्रभु राम॥ सो राम सब के प्रभु हैं॥ राजा है पीछे
जो देवता कहै हैं वे सब भद्र नहीं है का जन में लगाए हैं॥ इनै अ-
पनो जस॥ मेरो किये अपनो जस सुनैगो॥ क्यों हैं सर्व ध्यो
सुन दौरहुने या॥ दोसन पद के है अर्थ॥ एक तो सब दि-
सा रहने में॥ एक सब दिवसन में सब देस काल के दौरा
नाम मंडल है॥ सुनने वारे है॥ कहा विरुद्ध है॥ ४ ॥ राम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

5 कविध्यानकरतहै॥कौसलइति॥कौसलजनैया कोशलाजीके
पुत्रहै॥ तनपदको अपभ्रंसजनैयाहै॥जनकुंशलनिधान
है जिनको जनकल्यानको निधानहै॥अथवा॥कौशलनाम
कुशलताईकोताकेजनैयाकहाविस्तारकहै॥आगेहुगमं०
सपहीसे सावधान है कहासामर्थ है जिये परवीरजानठेको
चतुरहै॥हेसुजानयहसंबोधनहै॥अथवा जाननामज्ञासको
भोहै पर पीरकेजानवेंकोकहानाशवेकोचतुरसुजानहै॥

रामकेति॥हेमनजानेरामनामसोप्रीतिकरो॥जोकहोइ
मालस्वरूपकारजते सेहैमंगे॥धामकेकामतोकरोवतिनमें
उरझोमत॥कहामनकरनाकरो॥मनरामनामकीडोरराखौ
जोनवनेतोएकघरीहीकरौ॥जोनामनहीयोजायतोउन उनको
कोकहनो॥पैइमेकहा... भमैजानेपेटमरयोकहापा
पायोकीयो॥अवर्मीवहीकरेगेतोकोकहाचितहै॥लोहि
यकहामेशिलाकोसहस्राकर॥ आवरे उरआउ जीवजा
उभरहैसोनाउनौकाकेसमजातहै॥पतीतनहीहोत॥६॥
रामकोइति॥श्रीरामकोरूपदेखमानोमनोजकामदेवलज्जा
तभयोहै॥मानोयाहीते अपनोदेहबिसारगोहै कहा अनं
गभयोहै॥औरतिनकेउदवर्तनकोचंद्रमावनायाहै॥वा
कविलासतेधर्मरच्योहै॥कहावाणीउनकीधर्ममयहै॥
अथवाजिनकीवाणीको औरविलासको धर्मरच्योहै॥
वेदत्रईकरीवलतजोधर्महै॥सोरच्यो औरलोकमेफैलायो
है वंशीकोरतेनहकीयोविध॥कहाजिनको दृष्टसनेहसों
भरीहै॥शीलशरीरकीछायाते शीलशीतलस्वभावकी
या जोकाहूकेउपरवसनेमकुवादसहै ऐसेप्यारनकरीजहां
कहेहै॥ राम॥ १॥ ॥१॥ ॥१॥ राम

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

क्यों रहिते ॥ पृथ्वी मैं भरद्वाजी कैसे धीरज धरते कहिके
कहते कुजाने मैं परशुराम तुम्हें सबल नहीं उतो ॥ यांसीते ९
श्री पीके रुधिर कुंडन के सोते नाम स्रोत प्रवाह नदी ॥
उउँ दन परशुराम हलाल फिरयौ ॥ रावन के सब के हेद
रहते ॥ धनुष तोरके सीताजी के नायक वर को ते ॥ तेको
एतेथ्य ॥ जो रघुवंशी योंको सिरोमणि रूप राजीव लोचन
राम अवतार न धारते ॥ रघुतेश को यह अभिप्राय ॥ या लेश
सो परशुराम बहुत ही विरोध करतो हो ॥ जो का उर्हे धात्र
धर्म के भ्रम भंग दो षहै ॥ तो ए है भी अर्थ करहो ॥ कौटरने
सब रावन के धन ॥ रावन के सब स्त्रीं दानए कैसे दूर रहते
तो रकहा अब ने दुष्ट मैं तो लके यह कहो ॥ सीय लायक को
ते ॥ लायक को अर्थ लै आवन जारो रावन के घर सीता सों
जह कोल आवते । ते को ते को न मैं थ्यो कोई भी नहीं थ्यो ॥ ८ ॥
मो विनती मि ॥ अहुनाथ सेसनागजी कहते हैं ॥ हे विध देव
ब्रह्माजी तो मैं विन कान हो क्यों कीनो ॥ ब्रह्माजी को वचन ॥
हौ डरप्यो मैं या सों डरयो सुन मेरी बात हे फनिंद ॥ जो तेरो सि
कांधे र नैक भी डगैं तो तीनों पुर कूट जाहूगे ॥ ता कैहे जी कान दीर
सो मैं बचो सीस के पावतो ॥ तहां ब्रह्माजी कहते है ॥ रहो कहो
कौन है जो श्री राम को जस सुनके सीस ना कंपावेगो ॥ और
खास न लेयगो ॥ मैं तो बडे जतन सो त्रिलोकी रची है तहक
हाते रेको एसो ई कहत बहुरे जान के ॥ तही सिरदीनो प्र
पहीके तेरे तेरा सिरदी नो है ॥ अब या मैं सेसनागजी को प्र एकको
श्रम तो बहुरे कीनो फेर कहयो सुन बात फनिंद यह तिरो
ध आयो ॥ शेष नागजी को रामकथा को नाहीं नैय यह भीष
हा दोष है ॥ औ सांप नेत्रन कर सुनते हैं ॥ यांते और रतेरे
अर्थ करने ॥ पहली तुक मैं तो शेसनागको वचन वैसे
ही ॥ आगे ब्रह्मा के हैं ॥ हौं डरप्यो मैं या सूं डरयो ॥
जो कान होइगो तो सुन बात फनिंद कोई अद्भुत बात को
सुन के कहा नारायण के मकरण नाटक सुनके मैं फ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

6 भीसीसंकेपावेगेतोतीनोंपुरकूंटजोगहिंगे॥केरसहजीकहे
हैं॥हेकईंकोएसोकहाकोनहैं॥जोनसुनेजसरामको॥श्री
रामकोजसुनोसुनेऔरसीसकंपायकै॥सीसकोकंपा
यकै॥सासुनलीनो॥तुमारीसासुनकोकहाआहा॥को
लीहै॥लीनकरै॥केहादूरकरे॥अभिप्रायपह॥किमहा
राजमैंऐसोमूर्खएककवऊजोजोतुमारीआज्ञानमानके
तीनोंलोगनकोगिरावते॥रामजसहूनतोभीमनही
वाहने मैआनंदतहोते॥औरहिनेतोमौपकैसहूरस्योनही
जायगो॥तहांवलजीप्रहलदहावेकहेहै॥मेरामकै
नहलोकरुख्योहै॥सर्पोकोकाननहीदीएहै॥अवमै
तुमैवरदेतहो॥तेहऐसेतीजान॥यहवरकोसरूप॥
तेहकहातुमारीसर्पोकोजातकोएसेहीजानऐसेही
सबज्ञानहोयगो॥ऐसेहीकहाविनाहीकानोते॥जान
नामसुनवेकोज्ञानहोयगो॥तवयहसुनकेसेसनाग
जीनेनहींसिरदीनो॥तहांही॥वलजीकीजिवआज्ञा
मेसिरदीनो॥कहावहीआज्ञासिरपैमानी॥अथऔ
रअर्थ॥जासमैश्रीसीतारामजूवनवासचलेहैं॥तहा
लछमनजीकोवचन॥हेमहाराजमेरोयहवेनतीहै॥या
विधसोअहल्याछलदमनकीकहेहै॥सौविनकानन
कहितेकीने॥मेरेकोकाननजोवनतोंतेविनाक्योंकी
यो॥कहाआपतोवनकोचले॥मेरेकोरहांघोडचौ॥
अथवा॥सोविनकहामेरेविना॥काननकाहेतेकी
नो॥वनकोगमनवैसेअंगीकारकीयो॥तवश्रीराम
चंद्रजीकहेहैं॥सोदुरख्यो॥हेभाईमैतोतेरेविनाकहां
सन॥ जाऊंपरमैंपाहरडरयोजोंबातकहिहै॥जोलछमनजी
यहवातसुनकेडरोसिरहिरनैकयोरोसिरदुलाइदे
नहि हैं॥कहाहमऐसोराजाकोवचनमैमानते॥कहास्त्रीकै
वसहोकेऐसोअधर्मकीयो॥वडेपुत्रकोवनवासदो
रख्योदेकोराज्यहमनहीमानेगो॥क्योंतुमकहिदहो॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

तेज स्वरूप हो ॥ जौं कुटें पुरतीने । कह्यो महाराज दसरथ को
...गरि गोतो त्रिलोकी धूर जायगो मलै कै जैहै ॥ य
उर सो तुमारे विदारवन कूं चल्यो है ॥ तव लंघमन जू बोले ॥
देवन कौन ॥ हे महाराज मे हो कौन है ॥ हने जस रामको ॥
सीस हने जस श्रीरामचंद्र जू को ॥ श्री रघा सीता के सक
हा सहित कह्यो श्री राम सीताजी समेत स राजा को वनमा
नवन को गए ॥ यह जस हन ने ओर आप कैपाय के सब पाय कै
सा... लीने । स आसन लीनो ॥ सब कहा सुन आस ॥ को
जाने सीं जो है ऐसो जो कोई भी नहि या को परकटाए ॥
ओर से भरत ही है हम नही ॥ औरमे अमके मे कह्यो मो को
अमके ॥ आप के संग वन मे ॥ अमक ह है ॥ मै तो त्रई लोक
रच्यो त्रिलोकी मे रचर ह्यो है ॥ कह्यो आप की आज्ञा ते
तीनो लोक उठाय के ठोर सो सै हूं ॥ श्री राम को हे ॥ हे लछ
मण लछमण ऐसी धीर जवान हो तह ऐसे ही जानत ही
सिर दीनो । तुम ऐसे धीर जे जानके ब्रह्मा ने ... को पूरी
भा... मारे ही सौंप्यो है ॥ या मे लछमण जी की स्तुति
पूर्वक वस्तु निर्देश मंगल है ॥ २ ॥ रामः याहे
श्री रघुवीर उति ॥ श्री रघुवीरो के सिरोमणि जो श्रीरामचं
द्र है ॥ जिन की कीरत है ॥ किच्यो यह ह्यो है ॥ क्यो दूती को
परकाम है ॥ सीकेस्वाय मिलावे है ॥ या दूती ने आन
दई कमला... की विष्णु की लक्ष्मी श्रीरामजू को आन
दीनी है ॥ औ या बात को सुनके और जो सरलोक है
सो भी डरानो ॥ कह्यो डरायो ॥ पहि जानके ब्रह्मा ने भी
चार मुख कर लीने । कह्यो चारो तरफ देखत रहूंगो ॥ सम्भु
जो शिव है सो रहे अजहूं लपटाने ॥ कह्यो पार्वती जी
को अपने अर्द्धंग मे बसाउत भयो ॥ इन्द्र के जो है नैन ता
ने चोक के सहस्र कीए ... इन्द्र ने नर कीए ॥ पाहंसु
रु स्वामि कार्तिक ने चार ह दीन है ॥ क्यो सपा नो क हर्म मे है
कीयो

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अब ईहां कविको तात्पर्य तो यातनैंही भासैहै॥ परंतु यामे
लोककहतहै अनुचितार्थ दोषहै॥ परस्त्रीगामि कौ लके
रामजीको भासैहै॥ याते ओर अर्थ करतेहै॥ श्रीरघु:
पतवीरतहै कि श्रीरामजूकी हूतीहै॥ कहा श्रीरामजू
कोरस्माइकैमिलादेतहै॥ आन दई कमलाहरकी
यामैमेरेको आनहै सौगंदहै॥ पहिकी कहा नलाकी औ
रकमलाहरिकी ईंधां नारायणकी॥ यहवातसुनके
ह लोकस्वर्गभी डरानो॥ एकतोयहू॥ रामजूके जसगा
यगायकेलोग वैकुंठपामेगे॥ हमारेलीराजगाद्दिककी
ईनहीकोलेंगे॥ यहजानके ब्रह्माजीने चारमुखकीए॥
कहा चारोमुखनैं जसकरोंगो॥ सैंमुरहे महजहूलपदाने
शिवजूवा जससेोलिपरहीगयो॥ कहा औरसमकाम
कोडकेजसहीगावतेहै॥ ईंद्रनेचाकें चवितहीकेसह
स्त्रनेत्र वनाए॥ कहा ईन्हेंने नन करध्यानमें नहि आवेहै॥
सहस्रनेत्रकरध्यानकरके मूर्तिको हृदयमें ठहराई
केजसगाउंगो॥ स्वामिकार्तिकजी ब्याहनहीकरतेभए
क्यौंब्याहकी ऐसी कछू औरकामकरनो परेगो॥ अब
औरहीरामगुन मुहीतरहिगाएजांहगे॥ १० ॥

भोगहीरही॥ अबजोकोउकहैतुमरामचरित्रकोक्योंक
रतेहो॥ मोक्षकेउपायतो औरभी अनेकहै॥ तहांकह
तहैं॥ जोकोउकहैभोगनको सागकै योगभ्यासकरो॥
भोगनकोतजकेयोगतोकोईभीनहीकरत॥ मैंमैंशि
वपर्यंतसबलोगदेखेहैं॥ कहावडेयोगीराजतौशिव
जीहै॥ वेभीपार्वतीकोसंगमेराखेहै॥ औरजोआग
मशास्त्रकीवातकहोतोतिनसोमनसंसयनहीमिटत
सबकोएकसिद्धांतनहीं॥ औरवेदविवाद वेदकोवाद

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पंविर्वरयो नही जात है ॥ जो कहो मौन ह्वै न कहत कारे ॥ मौन ते कौन है गौटीर है ॥
मौन ते कौन सो सो भारत है ॥ तब भोटी हृदय प्यो रो सोहो भाको नाम है ॥ ते
को निरै है ॥ जैसे गौरी को गोरटी कहै है ॥ बोरटी कहे है ॥ कृपा को लेबिना
तो परखे ॥ वि॰ वार वो नहीं बुलसक है ॥ तातें वहजो यज्ञान तहै ॥
तो तेमैं नै तो ऐनजो भयहो गेहुद्वा ॥ को पाहै ॥ और श्रुति ह्वै तिनकी ७५
मौन है रोल भगति है ॥ जिन राम कहे गति तकाम सवारयो एकसा भिरा
मवे जग में अपनो मन लगायो ॥ ताने काम ललारयो अपनौ कौन
सिद्ध कौन ॥ २२ ॥ अपनी निरअहंकारता दिखावै है ॥ दैन कहें इति
दैन कह कव आन तन सुंदर ॥ दैन नहीं कहूं मै ॥ विदो यामें रेखा जामे
अन तन क कहा अंत की विस्पारथ सुंदर पै तो भी सेतन के हेत ह्रदया से
लखै है ॥ क्यो तुलसी राम के नाम सो मिली भई है ॥ कवि रामसुमको
सिर निवाय के ललाय है ॥ यामें दृष्टांत दे तहै ॥ जो जल पर मधारो भी
होयतो भैभगवान को अस्नान कराय वैजो कोइ कांहू को दरशा
मतदेय ॥ तौ ऐसो कौन है साध जो ना कादर सो कहै ॥ आदर को
वचन न कहेगो ॥ और शीस पै न चढावेगो ॥ और स्वाद न लेयगो
भाव यामे ॥ वे विने तो अपने रसनता कहो है ॥ पर स्वरसती ने या है नी
और ही अर्थ छिपायो है ॥ सेन कहें कव अन तन सुंदर हे कविता
को कहें अंतन नहीं और ही सुंदर आंपन तन सुंदर पर कविता है ॥
सेत सम्हरत ऊन बपे है ॥ सत और हे उतम कवि सो राम्हरेया । न
को संमऊरत तैसो छंद करनो ॥ भलो प्रकार विचारत है रं ॥
भीरु बयामें ॥ कहा कितनो हि विचारेगतो भी निरदोष ताहीप
मेगे ॥ कारेउ मीर ईसो इसको उरकीयो करे है ॥ मोरे जानी
गोनी रभी सहो सोय कहा नैसेउ तम होय गंगा दि नो घकोज
लहोय ॥ अथवा कारे नो ये समुद्र के जल मैं समुद्र को जलभीय

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

8

परमपवित्र है ॥ और काव्य को समुद्र की उपमा व्यंग ॥ कस्यो मैं जो विदंड्क्वा
रू रहौं तेरो ॥ एउ जो कविता परम सुंदर है ॥ इहरे राम नाम सो मिली है ॥ ७
सो मति हीन रचि ॥ सो मैं तो मर्छंदो ॥ यह कविता मेरे सिर पै उपहास धरै
गी ॥ यह जानत हूं है ॥ राम नाम इहै ॥ सुख देइगी सनके ॥ मन के दुख दोष
संताप दुख तो रोग ॥ दैहिक दोष काम क्रोधादिक संताप शोकादिक ॥
सनको हरेगी ॥ जैसे वनवासी जो नीच जाति भिल्ल किरात है ॥ उन के घर की
जो आग है वो ही है लघु दारु के मथे ते इल की जो दारु लकड़ी ता के
मथे ते जो उपजी है ॥ ताको जव जोत जरैगी तव कहा वह आग ल
को री सुन्दर के फल कर्ता काट के न दूर करैगी ॥ करैहीगी ॥ अथवा
मैं नीच रस्न जीते जौं अभिप्राय धरयो है ॥ या मैं यह अभिप्राय है कि
कविंकरत है ॥ मैं तो छुद्र और हौं ॥ साधु बात रण यह ना विचारै त
ती को कीयो ग्रंथ सन के सपटे लने सो मति हीन रहु कविता
यह मेरी कविता सो मति हीन कहा अहंकार को बुद्धि ता रचित
को हौं ॥ मैं ध्यान मैं लीन हूं के ग्रंथ करत हौं मेरे आपनो देहाभिमानन
हौं ॥ या हि ते आपनो नाम भी राम सो धरयो है ॥ कविता पर कोई दही
दोष करके कविता सिर जानत हौं उपहास धरैगी ॥ या ते डेर
कविता न के सिर उपहास धरैगी ॥ यह जानत हौं कहे ते राम न
इहै ॥ सब को सुख दे के दुख हरैगी ॥ कहा लोक परलो क दोऊ सुधा
रगी ॥ जैसे भील किरात की आग हो है ॥ ता वह लवरी को लहन कर
गी ॥ मेरो कहयो राम जस हम के पापन को भी अव दूर करैगी ॥ १२
जो कछु इति ॥ फेर काव्य कहत ॥ संत सुनो .... ॥ जे ....
.... ॥ हे संत तो तुम सुनो ॥ जो कछु वाव विलास जो कछु ॥ वानी को
विलास उल्लास को ॥ उल्लास सो जन ॥ जन सुनावे है ॥ सो हम अवधि
मंडल सुगंधित पुष्प सो समद है ॥ जव उनको फल चढे है ॥ कहा विकास

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

होइहै॥ तंयतें से अलि भ्रमरन के पावैहै॥ और आक के फूल॥ आनव-
बीजुरदाम है॥ सो तुमको वे भेरि कासके॥ परंतु चेत चढै तो धोइ, मैचौंपदो
तेहमलिंद भ्रमर है॥ कृपाकरके हम हो तन पै फिर आवत है॥ यामें भी औ
र अर्थ है॥ जो काव्य जो काव्य वाक विलास॥ हुलास सौं सरस्वती के विला
सको हुलाससौं मिलै है॥ और रहे सतो, तुम सुनो है॥ कौंग जहां कि जो नार
यणा के जसकर गुरू है॥ ताही में सरस्वती को विलास है॥ सो गुसांई जीने
भी वरन्यो है॥ स्वमर तहार दृ आवत धाई॥ और होत न भी ही को सुने
है॥ और मनुष्य चरित्र नहीं सुनत है सै सुने है॥ जग जांह संताहै
जगत मैं जा को नावै॥ तो काव्य पद्य रूपी फूल सुगंध सबै कवि मंडल है॥ सु
गंधवाले फूलन सम है॥ फूल चढै तुम पै अलि पावै॥ याको वह अर्थ॥
आकके फूल सम आन कवीसर॥ आन कहा है और जो कवि है॥ तैसे वह
और मनुष्यन के कवि है॥ मनुष्य जस वरनै है॥ तुम्हारे संतो के वे कवित
ही आकवे की लैं सम जो और विषै पुरस है॥ सो सुनै है॥ तुम्हारे जैसे
भ्रमर नहीं सुनत अवढ्है तैसे के कविन को कहके फेर अपनो प्रकार
करहै॥ राम तुम ऐका भांत सोर ठावैं॥ चेत॥ जैसे चेत को मास जामे मलिं
दो है॥ चित्त में चौंप चढै है॥ आनंद वढै है॥ और कृपा करके तुमही
भ्रमर फिर फिर के आवै है॥ अथवा तुम हि ठौर फिर के फेर फूलन पै आ
वै है॥ १४॥ व्यासेति॥ व्यास॥ औ पराशर औ नारद॥ श्री सुकये मुनिराम
वेद जी को गुन अवलों गावत है॥ पै यह नहीं कहै॥ हम कह चुके॥ सेष
नाग हैं भी गुन गाय के को ही हजार मुख की रहे॥ तो भी गुन के पार
हीं परहै॥ पार नहीं पायो फांते अपने आपको कवि है असामर्थ
ता दहकोनी परंतु तथापि हनूमान जी के वर होकर तहै॥ यह नि
नावत है॥ राग फिर हनूमान हनूमान जी जो श्री राम जु के संग
हीं रहत है॥ इनोने कह्यो है॥ ह॰ दास. मले हर अपना निज दा
स॥ यथा मति यो कह॥ जैसी मेरी मति है तैसे ते कह॥ आगे के कह

9

आवै

कितने कहन ॥ जितनो गुण तेरी मति मैं उतने कहु ॥ धरत्व मैं सम-
र्थ है ॥ ॥ ऐसे उपराम है कै हम गिने बैठे । कोई हनूमान जू को तरफ सौ
लागमै है ॥ पै वा मैं हनूमान जू की स्तुति नहीं । ता सौ प्रसाद सौ रा
म कवि कहत है ॥ महीन के गिरहो एक कफन की तरह दिखाव
त है ॥ २५ ॥ स्ववत्स पनी स्वर सै मर्थ ता दिखावन के व्याज कर
सूर्य वंस को वरनन करत है ॥ सूर्य की स्तुति ॥ कहा सूर्य जस सो लेकर
जस कहत हो कहत तो ॥ रामचंद्र जू के जस सम पर्यंत तो कहूं न रहि सकेगो
जा थां ॥ या ही तरह सर्वत्र अर्थ करनो ॥ सूर्य की औरनि की ॥
और दिली पत्ती रीति कहा लो सुनाऊं ॥ फेर श्री रघु के औ श्री
ग्रंथ अज के ॥ जस की कथान कौ कहा लो लिखूं ॥ श्री रघुनाथ के ता
त श्री दसरथ जी तिन को जो वात है ॥ ता को । जो तुम कहौ वर
नन कर कहो तो कहा मै कहन लगौं तो कहो कहा अंत न पा
ऊं ॥ तुम कहो वताऊ ॥ मै कहा अंत पाऊंगो ॥ ता ते सुनो श्री
राम ही की कथा ॥ तुम सो कहत है तन वेजो ताप है अध्या
त्मिक आधभूत क आधिदैवक ॥ तिन को सिराउ सीतल
करो ॥ या को अर्थ कोई औ रतरह कर हत है ॥ सूर्य सो से
के जो राजा भए है ॥ तिन के तो गुण अनंत है ॥ केहन लीजरह
पै राम चंद्र जू के गुण कहत हो ॥ यह अर्थ नीको नहीं ॥
या मैं श्रीराम चंद्र जू के गुनन की निंदा पाई जात है ॥ १६

९

॥ग्रंथकी सूचना कहत हैं॥ रिषि विश्वामित्र जी। तिनके
जैबो। शिवधनु भंजो रखो॥ धरनजा श्री सीताजी को स्वयं
वर। श्री रामचंद्र जू को जस की प्राप्ति। धायबो परसुरा
म गैल में॥ गैल मारग में॥ परसराम को धायकै परनें ओ
बिसारबो। फेर षिसाके परसुराम उलटकै वनकू गयो॥
श्री राम को। राज गायबो॥ राजको कथन मात्र फेर व
नको सिधारबो॥ याही मैं केकई को वरदान मांगबो आ
यो॥ और याही मैं वन के चरित्र। सूपनखा को विरूपक
रबो। खरदूषणादि वध आयो जनकजा कुरंग खो यामें
रावन को योगी ह्वैबो। स्वर्णमृग मरीच को मारबो भीजा
नीए॥ समुद्र को पदारबो॥ कहा सेतु करबो यामें सु
ग्रीव दिनकी मैत्री। वालीवध॥ लंकादाह॥ ये आय लं
कापत धारबो। रावन को मारबो। रावन के मारबे में सम
कुटुंब को मारबो प्रगटयो॥ और लछमनजी। तो याकी
जानकीजी इनको संग लैकै पलटकै श्री अवधपुरी मैं आ
रबो॥ सु ऐसे कहा या प्रकार सो श्री रामजू को गीत कथा।
राम को है सो तजनो सुनायबो है॥ यामें ग्रंथको नाम राम
गीत है। यह भी व्यक्त कीयो है॥ १०॥

धनुभंजन॥ अब कथा आरंभ करते भए हैं॥ ध्यान करते हैं
खंजन सम जिनके लोचन हैं॥ कंज कमल सो मुख है॥ नैन
कहा नित्य है॥ जन्म मरण आदि तें रहित है॥ पराई पीके खंडन र
वारे हैं॥ अरि जो शत्रु तिनके गंजन नाश करने वारे हैं॥
शिवजी को धनु भंजन करन हारे हैं॥ भव जो संसार सं
हार ताके रंजन प्रसन्न करन हारे हैं॥ रघुकुल में वीर हैं॥
सुखसागर हैं जि॥ सुख के सागर समुद्र हैं॥ नागर चतुर हैं॥
नवल कमल वदन नवीन कमल सम जिनको मुख है॥
दुति मैन॥ दुति सोभा मैन कामदेव के सम है॥ अंग धरा॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

10 नवल कमल। वदन दुतमैन। नवीन जो कमल है सो वदनकी
दुतमैं नहीं॥ वदनसम नहीं॥ करुणा की आकर खान है॥ व
रु नादिदेवन के पति है॥ किंवा॥ करुणादिकन के पति जो रुद्रा
दिक॥ तिनपै करुणा करणवारे हैं॥ सरणागतन को सुष
के दाता है॥ २८।
॥तैठहते॥ रिषराज कह्यौ राजरिष विश्वामित्रजीनें बैठके।
मुनीश्वरों से मिलके ऐसो विचार कीयो। और यह कह्यो॥ एय
जग मारे मरणा होने नहीं पावे। सुवाहु मरीच ताडका एह
विघ्न करत है॥ कसौ याके राय कवल वान कौन है। उनको दि
अदिष्ट करतौं तौ लोक देषके भी रामजू विचारे तं यथा
यच्चसोन यसो कहु वात कही नृप राजा दसरथ को॥
शोक की वात कही॥ समझाके। वडे भारे सुष सो। अथवा
अथवा वडे कसूर की ए सुष भारे राजा के॥ किंवा दाय
केंचरसो विश्वामित्र द्वार पै जायके द्वारपाल सौं कह्यो
नृप सौं कहु वात हमारी वा तरा जा पास जायके कह॥ वा
ने जाके राजा को समझाके कही तो राजा को वडो सुष भयो॥
यामें कवि को मन रामचरित्र के कथनको उत्कंठित है रह्यो
हो॥ यांतें यह वृत्तांत संक्षेपतें कह्यौ है॥ आगे भी कह्यौ ते
नटेर॥ कछु यामें प्रतीत नहि हो ते ऊपर सो समझके॥ कितै
सुवाहु मरीच ताडका यज्ञ विध्वंस करवे सु नहीं टरत है
कदाचित राजा यह नाकहु उठ किमै चलके रसाक सु
यांते कहे हैं॥ उनके सन्मुख होमते ससी सूर्य भी टरत हैं
एक श्रीरामचंद्र विना। और कोई नहीं उनै टर समनका रो रं०
सो चहि॥ यह वात सुनके सोच वडो राजा के जीमें॥ कु
लपू[illegible]जे कपाय नलग के पर आगली वात वनावें है॥
किए करामचंद्र सो तिनाती मो भरतादिकन को अपने स
ग लै के गुरु जो विश्वामित्र है सो सुखपावे यामें यह सं

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

देसोहै कि एक तो यह राजा को उत्तर नहीं श्रीराम को प्रि
य जाने॥ [illegible] औ पुत्रन को प्रिय जाने है
जे विश्वामित्र को कुल पूज्य औ गुरु [illegible] को दीहे॥ सँबोधन
गाधपी राम गुरु के गे ये पीछे तो नहीं। उत्तर जो तू वि
श्वामित्र जीने राम चंद्र मांगे। तब राजा डरतो भयो अपितो
उत्तर न देतो भयो। वशिष्ट मुनि जी को व्यापार कहे हैं उत्तर
वा दियो॥ सो चव रहे गे नृप के जिय में कुल पूज्य पावन ला
गे। कुल पूज्य वशिष्ट जी के पाइ न लागवे। मनावे दहगा
त अंगीकार करावे है। कि एक रघुवीर से बिनां। तीन र
कहाइ न तीन यज्ञ विध्वंस कों को अर्थात ताडका सुबा
हु मरीच को ले निज संग अपनो स्वयं संग कहा साथ
लैवे। गुरु हैं वशिष्ट जी छिपा में। उनको नाश कर आप
जो तब वशिष्ट मुनि कहते हैं॥ हे राजा तू मन में चिंता मत कर कर
ए तेरे पुत्र सब विधि करकै सम्पूर्ण हैं राक्षसन को अवश्य
मारेगे॥ फेर राजा को ऐसे रिषीने राजा वशिष्ट मुनि। के
अथवा विश्वामित्र जी सुनाये हैं हे राजन जाम कसौ
राम कह्यो कहा रामचंद्र जी को मांग्यो। ताही भय से
अब और कछू कहो भावे नहीं मेरी प्रतिज्ञा यही भई है र
हगई तै॥ तब राजा कहते हैं॥ हे मुनि अपने संग गभीर ले
के समीर पौन सो भी वेग कहा चोती धाडे दौर के जाउ। जो
तुमारी आज्ञा सो आज्ञा पाउं अर्थात। यहि नहीं कि तुम भी
मेरे संग चलो मैं तुमारी आज्ञा होतीसो जायके उनै मारो जो।
यह राजनीति है॥ और नहीं तो जो तुम कहो तो वगम में
मारे उनको ढेर बनाय देउं॥ और मौ री दे तरहो॥ कहा
चौकी देत रहो॥ यह और मैं जैसी रीति है॥ इतीयाके व
दंसम जो राम चंद को न देखो तो हरि भी तुम हू बिचारो
यह कितनो कि विपरीति है॥ यह अर्थ वांछ्न नहीं दि
तीया के चंद को कोई ना देखे तो कहा अनर्थ होंजात है॥
ताते यौं अर्थ करनो हे मुनि हे एह बालकचंद्र तीया के

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चंद्रसम हैं ॥ जैसे दूज को चंद्र परम बाल एक कला को होत है
तैसे मेरे परम शिशु बाल कहे ॥ नंदे ओ मैना ॥ तुम अपने नै
नन सौं नहीं देखते ॥ यामें काकु ध्वनि पद विचारो कैसी
विपरीत उलटी बात हैं ॥ हम बडे बडे सूर वीर घर रहैं ॥ बा
लकन को युद्ध में भेजे कैसे बाल कहैं ॥ भीरुसमनागजे ॥
समस्त हीके लिखे हुए नागत भीरु डरते हैं ॥ मिस नाग पा
ठ तो यतो मिस कहा छल को नाग ॥ कोई रसरी आदि
को सर्प करके दिखावै ॥ तासों डरते हैं ॥ ऐसे रघुवीर
पिशाचन सों कैसे जीते गे ॥ २२ ॥ राजन्नरति ॥ हे राजन
ज्यों बात को बढावते हौ ॥ ज्ञान को गहो अवतो हमारी
मति बुद्धि में नहिं जानी है ॥ पीछे तो रघुवंशी यों ने ब्राह्म
णों को कबहूं दुःख नहीं कीयो हमसों नेह बढावत हो ॥
पन फेर मोह मेरे दुख ते हमारी राजधानी वसेगी अर्था
तन वसेगी जब रिषी ने ऐसे क्रोध के वचन कहे तब दू
हके त्रास सों जैसे भूधर पर्वत डरते से डरयो ॥ ब्राप
र्वतो को पंख काटन भय होते हैं ॥ तैसे ही मेरे पुत्र रूप
राम लक्ष्मण को यह ले जाते हैं ॥ रामचंद्र राघवे कीग
तै न रूप नै कोट कू ओ रमी कही पै रिषीने एक भी न मा
नी ॥ ॥ कोप रति ॥ अज को नंदन राजा दसरथ सु
निं ऐसे कंप के उठयो ज्यों कमल जैसे जल में ॥ वायु जो प
वन है ॥ सो डुलावत है ॥ इंदु चंद्रमा को डुलावे है ॥ ओख
र कहा तो भयो लेउ जू लेहु ॥ दोउ हाथ जोर हुए कांपत
है ॥ नृपंद राजा को और बात कोई नहीं फुरती पारी
त को देख के रामचंद्र आपही रघुके मुनि के साथ च
लपरे ॥ पिता के पावन में परके विदा भए ॥ फनींद्र जो
सेसनाग को अवतार लक्ष्मण जी तिनको भी संग ली
यो ॥ तब यह समझ के रिषी ऐसे उनको संग लेके उठ
स्यो ॥ जैसे भ्रमर कमल में ते सुगंध को लेके उड जात है
मत कहू फेर फिर जाय ॥ अथवा तें जकमल के वा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

प्रसो बसत हों॥ जैसैं औचक मलिंद है जैसे ऐंचतसौं भ्रम
रउडत है॥ कहत रात को कमल में मुद्यो भो रप्रात
हमै कमल को मुख खुले तब वडी घीततो उडे है॥ रघ
संग दृगि॥ राम लक्ष्मण को राजा ने ऋषी संग करदी
यो॥ सौ कछु बस नहि चलत भयौ॥ सोइ दुख राजा ने
नैन नीमें छूटो॥ कहा रानेकों भए वै मुनीश्वर सो
डरते हुए वासुमें राहू भी नहीं॥ ताही दिन सो रामजू
विना कछू भी नहीं हलात॥ यो कहा या और रहे है॥
जैसे वनमें लूट्यो भयो को डकुमी हो॥ क्यौं राजाके
८ घरकौ जो मनि लेगयो। और सी रघुनके पति गनक
स्तै॥ मै जानो हो सूर्यवंशीनको सुख रह रम यो। मुनी
के पीछे राजा के नेत्रसो एसे निरंतर जल जात है॥
जैसे कुंथो भयो चरि सत्ता हीर रहे है॥ निसवासरकृत
दिन रात्र। यामें यह छवि निधि। राजा को राजको नित
भी नहि चरत॥ ॥

रामसों इति॥ रिषिराज विश्वामित्रजी रामजूसों य
हबात कहते भए। तपोवन को जो तुम आज ही हेरे
चाहो हो। तो है सतसंग दरा एदाकु मेल है एकुमेलते
तपोवन है रहे एकते नेरोहै॥ परंतु जो मारग निकट
है॥ यामें एक पिसाच नी हैं॥ कहा रा दासीहैं॥ तव श्री
रामचंद्रजू बोले। चलो किन तात हे पिता चलो कों
नहि॥ मृमेरो करो। मटनकों मेरो करो ताकुल कान
नको॥ तिनके कुलरूप कानन वनको। हम पावक
आगि हैं॥ वीर श्री रघुभाई लक्ष्मण। समीर पवन
हम मेरो सहायक है॥ २६॥ राजन विहै इति॥ राजरि
षि विश्वामित्रजू हंकों मिस करके रामजू ओलेके
आपने आश्रम को चलो जहतो राजा दसरथी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२०

12 आनके पूर्ण करवा देत ॥ ये सब प्रयोजन इनको यही है ॥
ता विकसत है ॥ हे संतजनो देखो तुम आगे मार्ग ही मैं तार
काटा नसी प्राणा पधरा ए है । कहा जाय गे औ जाय भी हरो
सोचजो ॥ औ पर्म पूरण आनंदस्वरूप श्रीरामचंद्रजो स
ग गमग ॥ ते नदी संपूर्ण होते जहां श्रीराम विसरे रहत है ॥ कैसे
श्रीरामचंद्रजी है संकट हरने हारे है दसरथ के कुमार है ॥
या मैं सूर्यवंशी रघुवीर जनाए ॥ ताज ज्ञा की छाया है
करा छाया हुन सम सदा संग रहत है ॥ लोग चारो जगत हु
मैं है ॥ आए वीर खीर आरो है वीर दोनो भाई ता पिसाचन
के निकट कौं विकसत है ॥ देखो आज रघुवीर पद रूरन को
पाइ है ॥ आगे तौ वाल कहीं कहावत है ॥ या को और रभी
अर्थ है ॥ कि मैं लही मैं तारका के प्रान पधरा ए है गै ल
ही मैं दूर कीए ॥ कहा युद्ध करके मारी आगे आए वीर
वीर ॥ याको पर अर्थ मन तकमई पिशाचनी निकट आ
ए । आज रामचंद्र रघुवीर नको पद पाइवो है कहा स्थि
तम ए है ॥ यह अर्थ वा सोनी को भासे है ॥ को जो आगे
को कहीं तारका मारवो युद्ध करवो नही कह्यो है । तांही
दिन त्रिरछ्यो या दोहा मै भी तारका को मारवो भासे है ।
तारका को मरवो ही हरख विषाद को मूल है ॥ आगे
इहं विधि जादो हा मै ॥ तारका की मुक्त करी कही है ॥ यु
द्ध औ मरवौ न ही कह्यो ॥ । ताही दिन ही ॥ आगे स
भ देवता सदेह से हुते । जा दिन तारका को मरवो भयो ।
ताही दिन इन सब देवतान ने निरख्यो है कहा रामवता
र को परख लीनो ॥ वरुन ने विरंच ब्रह्मा ने सुरेश इंद्र ने
मन मैं हरख्यो ॥ औ यक्षिल कहु छोभ भए कौन । फणीशेस
नाग । कुवेर महेश । वरुणादिकों ने तो या सो परख्यो जो
रावण सो इु छोभ भए ब्रह्मा इंद्र चार तेतीस रामवतार
को वरुण समुद्र को भी रावण कुंभकर्ण उलंघन
अवगाहन कर इु छोभ करते हुते । अव इन ने भी परख लीए

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

12

ऐसो हरिकों देखे तो यौं भयो कि दैत्यनाश होंहगो। सो वैरको भै
वे
कयौं भयो। शेषनागको तो शिरपै दलनको भार भयो अथवा
सुलोचना नागकन्या कों वैधव्य होवेको सोक भयो कुबेर
कों अपने धन के नाशको भै भयो अथवा॥ कुबेरको भा
ई रावण ताके मरवेको सोक। शिवजी के धनुष टूटवेको सो
रावनके वरवे तासू के कों शोक भयो अथवा औ भयो॥
ताही दिन लिख्यों दे भग ओ सुधै चरणादि चौदेव
ता दूर्ग विलखे वसुनतो तिलको सपुन्य बांध्यो वेसो॥ ब्र
ह्मांवर भया हैं वैसें॥ अथवा॥ राक्षस ब्रह्मा को वो त्रड
तो याहीं॥ छरे सडर पो पृथिवीपे भार करके फन जाय
कों त्रिलोक सहै॥ अथवा॥ अमृत को देनो परेगो याते
विषाद॥ ॥रेहु विच इति॥ रामचन्द्र वडनै पिशाच नीया
विधसों मुकत करी अर्थात जनवा को मारके समीप आ
ए॥ तब ऐसी सोभा भई। वा को शरीर का रोम घस मानों।
श्रीराम जु सूर्य ते सम ताके पास आवत भए अथवा श्री
रअर्थ॥ जनवा के समीप आए जनवा को मोक्ष दई ताकी
देहसू एसो तेज रूप ज्यौं। कहा जीवात्मा॥ निकसौ॥ जैसे
वर्षा रितुके मेघ फटे तब डनमै से मद्ध सूर्य निकसे २९
चलेइति॥ तब आगे को चले यमक के कहा ही धृगतकु
के दोऊ वीर रामलछमन विश्वामित्र के पाछ नमैं दरवै
धरें जिननें धनुष के मुख पें तीर तब सुधर्या के रिवारज
अबकि सका को हनो मारो अथवा से नि जब तुम कहो
गे तब ओरको मारोगे॥ ३०॥ देख इति॥ देख के तपोध
नको वन श्रीरघुवीरनै समीर भई के सहित वडो सुख पा
विला
ल
यो तालतमाल वडे कदम है के जकमल सरोवर मै जहां
भ्रमर गुंजार मानै है॥ अथवा कंज सरोवर कें सुधताको
उत्पति कर नवारे जहां सरोवर है॥ औरजो जीव है सो तो
भार मानै है, या अर्थमें काल विरोध नहीं॥ उत्तमे
कमल नहीं होते॥ यांते कोकला की रतो ते कपोत॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri Vaidika Bharata Initiative

13

सिक्षीमयूरहूनेकोजहां छ्वानेहैं देखे ॥ इसचकोरसंक्षितयो
देख्यो मानो गिरिराजनैं लैकें वसंतमैं रामकों दे इसोई
भयो कामदेव सो मिलायो हैं ॥ श्रीरामचंद्रजूके आगनें
सो मयूरादिक पंखरूहतभए ॥ ३८ ॥ जाग्रस्योइति ॥
तबविश्वामित्रजूनैं जज्ञरच्यो यहजानके विरंचवह्मा
नेहलगोंडमरीचदोऊ मीचको पेले । मीचतौ रचेलके

॥२८

पठाईहैं ॥ योगजो । कंधमुनि गई पृथिवीकल्याई ॥ स
भहीं कांपउठे । एकरामजू बिना जो कहो लक्ष्मणज
क्यौं कांपते भए तहां कहैहैं ॥ रामजूके स्वरूप हीमें लक्ष
मनजू आए । धायकहा दोरकें गहे पकरे ॥ दोऊ रघुवी
रोनें । श्रीरामलक्ष्मणनैं ॥ एकतो भागगए कहा मरी
च औरताकेसंगके एकैं जो परछेलेकहां ज्ञान सो वाजी
छेलें कैसे जो पछेले ॥ मानो बडी प्रचंड जो वली पवन
नैं कदली कहा केरानके वनके वनहीं । धरनीपरमेले
कहा गिराइदीये ॥ ॥ पूरनजज्ञइति ॥ विश्वामित्रजू
नें अपनो जज्ञपूरणकीयो कवि कहतहैं ॥ परपूरणव
हजज्ञभए तहां कछू द्विताई नहीं नाम लीए ते अधि
पापिन के वृंदटर जातहैं ॥ फेरजहां आपबौंन कमान
चढाई तहां तौ कुछ संदेहनहीं तादिनते तांहीदिनते
विधवह्मानें रावनको मीचकोरच्य रच्यो ऐसे बढाई ॥
जैसें किवावन अवतार वढे हुते ऐसें वेगहो वाढवढी
अंघ्रीलवाकोपेही ॥ ३८

Pingal Ram Das Krit

13

(21)

ॐश्रीगणेशायनमः॥अथश्रीमद्रामचंद्रायनमः॥पिंगल
रामदासकृतकवितवलीलिष्यते॥ ॥दोहा॥आदिअनादिअं
नंतजोवरनअभिन्नसरूप॥वंदौछंदउदारवंदहौंरसोदासअत
मरूप॥१॥मंगलकीनेग्रंथमेविघनविघनकुलहोइ॥यांते
विघनविनासकग्रंथमेमंगलसोइ॥२॥निजगुरुरघुवररतिसा
रदासेभक्तसोमुषचार॥छंदज्ञानगिरिजदासकविवंदनवर्द
नदजास॥३॥वरणालयकेपारहितसारदअतिपरपास॥ग्या
पकेरोउपेदासकवपारपरयोचहदास॥४॥यथाभक्तकेप
दरमैपंदरपदरमेपदर॥तथाछंदकेवदरमेलहरलहरमे
लहर॥५॥छंदसिंधमैपैहरनरपारपरयोकहकौन॥विध
लोउवुंधलोतिरेकेरफेरेगहमौन॥६॥जोतनगहितवतसिंधु
केकितेमुननमतन्यास॥रीतअगमसतमससमितिलनटिटिभ
मयोकवदास॥७॥मतलहैमनवितुंकोअंतनलहैनहितिगत॥
यांतेअष्टमकाररीतकहतकविमित॥८॥ज छंदकेवी
जकोकोउतपतीवार॥कोवकताकहिकाहकोकहिरसवितत
कोआद॥९॥वीजछंदकोलगेमतअनिरवचंपरण
म॥कहैयोतेसबगपतीसनअषरअगदिसधाम॥१०॥प्र
थमकहूमसतारफिरसंष्यासूचीनष्ट॥११॥सोउसंविध
मसतारपुनतेतेनष्टउदिष्ट॥वरनमतेउमैविधमानतनु
नमनरष्ट॥१२॥संष्यासूचीगिरधुजाअोरमरकटीजान॥
रनगतभेदअनेकहीआगैकहैंवषान॥१३॥अथमस्ता
रोतपती॥सषष्वपरमरमलघुइकुमलमक्रितगुरुजान॥
इहैत्रिगुनचलकरतहैमतिमक्रितगणिमान॥१४॥
त्रिगुणामक्रितकेविक्रतयेमक्रितयेउमसतार॥१५॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

14

सोरठिनविधसोजानियेइनकोअबहैगवार॥१५॥पाँचकोरहु
रसआठविलंबनतजयोबडुनाहु॥जैसेदिनगनविनहुवनंत
नहींकवनाहु॥१६॥बरनमत्रकेभांतह्वैआठपांचकीरीत॰
प्रथमबरनकोबरनअबमतमतमेमीत॥तीनबरनको
बरनगनगनचतरुमतकेमत्र॥इनकोटरहमैदिनगन
बरनानकवीरमत॥१७॥अथगनसरूप॥मयरसतज
भनआठपरह्वतिगुरआदलघुमध्य॥अंतगतौमध्य
आदिगुरुतीतोलघुगनबध्य॥१९॥अथदेवतागनफल॰
दितनलवल्लीवापुनभसारससीपुनसेस॥रमद्विधीम्रि
तभमनरकुजनसम्मापुविसेस॥२०॥अथमित्रामित्र॥
आदिअंतकोमित्रगनदुतीसपतमोदास॥त्रितीतरीत
रसत्रुलखिपंचमछठोउदास॥२१॥आदिअंतकेउभैर
भैसमनमध्यकेचार॥पातेआदिकवित्तदै॥दै॥धरोवि
चार॥२२॥अथदुगणफलाफल॥मित्रमित्रगनसिधद
मित्रमित्रपजयजान॥मित्रउदासीलघ्यनहिमित्रसत्रुदु
खदान॥२३॥उभैदासनासनजगतदासमित्रफलसार॥
मित्रउदासीदारलखिमित्रसत्रुदाकार॥२४॥ह्वैसम
समहीफलतदासमसरहितोसर्वथा॥उदासीनतेभ
रवजदाहैपापगिंकोनेम॥२५॥समसत्रुफलदानका
तनदोषविरोध॥सत्रुमित्रफलसत्रलेसत्रुभ्रित्रस
सौरोध॥२६॥नदो ॥सरसंवधीसवरजेभन
नभजनरघुवीर॥अगनरगधनहुकरनफलजह
नयेसनधीर॥अथरगधवरनन॥दोजभजापुन
रतुफराकावाभमदासंभका॥फेरलकोसहसंजताभ

भाषत येद गंधक ॥२८॥ बादादो संजोग जो क्रम संयोग अरु
य ॥ तिहू लघु को गुरु लघु कहू वरहू दै जाय ॥ २९ ॥ जैसे जु ध
नकार को दीरघ होत उचार ॥ तैसे ही कै नित्य नियम कौ लघु अरु रह
त नकार ॥ ३० ॥ हस सो हस संजोग जहू वर्ण है संयोग सुजान ॥
हस हर विन सब स्वर लघु अरु च गन ती नव मान ॥ ३१ ॥
उत दर्शन हव विनको वरनन ईय को मान ॥ जात अरु
अपकक कवीन को सरवर नन सुछदान ॥ ३२ ॥ त्रोटका
दिहगणादि विन होत न कवि सज्ञान ॥ या ते गण गुरु
दोस यद मत तादी मै मान ॥ ३३ ॥ ईहां अनुष्टुप आदि मे
उही न गण को नेम ॥ जहा ने मत हो दो बन है मते मुन
न के षम ॥ ३४ ॥ प्रस्तार प्रयोजन ॥ छंद ॥ भेद वरण गति
संख्या भाष्यै जैसे मन वरण गति बढावे ॥ विभ चारी रूप जन्नै
फिर सो प्रस्तार कहावे ॥ ३५ ॥ अथ प्रस्तार करन ॥ भुजंग प्र
लिख वरण प्रस्तार मै दीह सारे ॥ लघु आदि दीदी रके
तले धरै ॥ जथा पंति आगे वचै वाम दीह ॥ जबे हानदी
हान ही आन ईह ॥ ३६ ॥ अन्यच्च ॥ चौपई ॥ छंद रीत प्र
स्तार मना ऊ ॥ द्वकार कक्ष लघु लेम धराउ ॥ येक वरन
के दोप सरूप ॥ लिषै ऊ धा अध ऊरध रूप ॥ ऊरध षंडग
रुध अंत ॥ अध रषौ लघु हरत संत ॥ वडु रहु गनालि
षवा ही रीत ॥ ऊरध गुरु अध लघु धर मीत ॥ ३७ ॥ दोहा ॥
जितेवरण प्रस्तार कहू जिते वेर अध लेष ॥ ऊरध कारक
गुरु धरै अधर करक लघु रेष ॥ ३८ ॥ संख्या प्रयोजन ॥
विन प्रस्तार मरकटी विन दरव न पाताल ॥ वृत्त भेद
नष्टादि के संख्या करन तत काल ॥ ३९ ॥ प्रथम येक
कहे क्रमयदी वरन मन निरधार ॥ मन त्रिती सिरिति

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

15 कैंधरवरणत्रितीसिरदार॥४०॥सोरठा॥मत॥व्रितमैंभीत
2 भेदद्रूसंख्यायेकही॥वरणभेदसुनरीतधरयेदसंख्यादि
गन॥४१॥चौपई॥ननुसंख्यामेंसंसैआइ॥येकादिकउत
पतीनाइ॥कारणकवणकरणपुनकौनै॥कोनकाल
तमिंयेनहिंजोनै॥जवनैपापकगोलसोआनि॥अरेअ
देमततमानअजान॥औसावादनिरारयठगाठे॥यामेंसे
ध्यामंलउडावे॥४३॥एवंनिसयनितयगतिमान॥संख्या
विपंइख्यनवजान॥आणकालादिकआत्मगोण॥
यागजियेकासीहैंन॥इत्वसंख्यपाताचअभाव॥जनसी
लपुनचवठभाव॥यातेइत्वादिकउतपती॥कारण
आणदोयप्रतिसती॥४४॥द्वत्वद्वयाकरणयिप्रा
ने॥लगितिकालनहिंकालअघने॥सत्यनिस्यगतसं
ख्यानित्य॥इत्वादिककहिंकहिंप्रनित्य॥तेमत
सत्तनकोनहिंनास॥बहसंख्याअवभईअनास
बहसंख्याजोमानैनित्य॥द्वत्वादिककतहोअनित्य
४५॥जोंअनित्यदिकआदिअकास॥तौमततेरो
भयोविनास॥पुनपरमाणगतयेकत्व॥भिलेदुगणक
फिरभयोअसत्व॥सोपुनिद्वत्वविलनहिंहोय॥य
थारकत्वतयापुनेहोइ॥यातेद्वगणकनित्यअ
वभयो॥हेअभिन्नताद्वत्वनभयो॥४६॥रहोविवि
चारअवरयोजोय॥हिंसाद्वत्वद्वयाकरणनहोय॥द
धानित्यभयोजोकाज॥द्वत्वअननतकहितनहिंलाज॥
क्रिरिहिअभावउनाजबहोवे॥वहीकालकहिंकौ
भतिछोवे॥ननुद्वत्वआवष्याजंन्य॥नहिंकोकार
णमानोअन्य॥तत्यआवष्याईस्वरकेसी॥सिष्टि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

कालमैतेंद्वीटेरी॥ईस्वरनिरभ्रमितमानोसत्य॥जिजमम्मा
कोअवकरोअसत्य॥ननुदेवअपकैहैकफुनऔर॥सत्या
रवेनिसपद्दद्वऔर॥कालकलाकलनानवअंग॥याभै
कोयनसेकापेक॥४८॥संतकहोसंसैकफुतात्द॥नवते
अधककवनकरआद्द॥जोपुनअंबाअंकपुनवेै॥रा
करकपुनकेंहकोजानै॥दुसाग्दिवाणुनजनैजरूर॥नि
त्यक्तिध्यमततमरोद्दूर॥अरुपुनक्रमकरिवैपुनजैनै॥
नवकोअवधतथापुनद्दनै॥४९॥ननुअंकतगति
वामविधानो॥आगेअंकुनकोविधिजानो॥वहीज
नेसमआठोआठोअंक॥नवकीक्रियसनोमिरसंक॥ डरें॥
येकाआठकरतआभारै॥गुनतगुनतवसअंकडपा ...म मजाल
वै॥क्रियेसंकलननवदृष्ट्यावै॥संसस्यपकोकोनउपावै
नवकोनवगुनकोनवठावै॥५०॥अरुपुनपारधकौ
करवनै॥विनविधयेकाठिमजनै॥एकोरेवसपनद
सकन॥ताकोविभिअवकरैहेउन॥अरुपुनपोवडु
गनजवभयो॥दसकाअंकतवेनिरमयो॥५१॥उत
अंकसत्यहैआदि॥पांतेविंदुलखोअनादि॥सम्मिये
हेष्याआदिसुनाऊं॥तोअनमवआरुढकराऊं॥
रोह॥अक्षरयाकीआदिहैकरणाकरमसतार॥
मै तीनकालैदिपतउतिअवउतपतिपरकार॥५२॥
चौपई॥मक्रितअंकराकउकारविंदुजुतलखहोनि
रधार॥क्रियमसतारगुरदृककेरो॥कतीरुपमाकै
लघुकोहेरो॥वरनतीनमतौंमहैचार॥वरणमें
नसोहेष्याधार॥अवरेष्याकीरीतिसुनाउं॥र
रवलोअनवंधमिलाउं॥५४॥दो०॥जितेवरणंते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

६_16

रूपजे वढें भेद कवराज॥ भेद अर्ध संख्या लषो विन मेरु गा
ते भाज॥ ५५॥ प्रिथम रा कहै चतर वस षट दस वनें सजा
नें॥ सर्व ते परें हू गन धरै संख्या अंक महान॥ ५६॥ मध्य रे
षमें प्रथम ही धरें दूतीया दक अंक॥ अंत तेर था सिर अंक
को रे दस मठ निरसंक॥ ५७॥ आन रीत अवल षतहो लष
क वजन अभलाष॥ रूरव संख्या विन लिषे प्रस्थम वरन ते
भाष॥ ५८॥ अर्ध अंक वरनन जिस लघु धर समऊ लकें दु
त अंक॥ जहां लंघ्य तरु दुगन कर अंक रहे गन निरसंक ५९
हू या लग समझी छंद के भेद भाष कविनाह॥ अंक अमदे सहू
ऊन कर एक कहो समुचे तागुदो॥ ६०॥ अमम कवरन ते अमम वतो मे
द समुचे भाष॥ तजो वरन के भेद तज परे दूहूं अभिलाष॥ ६१॥
अथ स्रुची॥ रितहें द सम अरधो कसम जिते हो गुरु वेत॥
उतने ही लघु वेत पुन सूची वरन तसेत॥ ६२॥ पुन०॥
रेष लीसें संख्या कजो जानत ते गुरु वेत॥ जितने दूलघु
वे तहै गाष तमु नी अनंत॥ ६३॥ जिते भेद गत गुरु लघु
भाष तते प्रताल॥ सिर संख्या दूत वरन सो सभ गन भाष
उ ताल॥ ६४॥ अथ नष्ट०॥ इते वरन गत आमक मो
के सो रूप सनाय॥ सुधी प्रस्न तष सम विसम भाष
तन ए उपाइ॥ ६५॥ सम संख्या सन लघु लिष विषम
रहें वक॥ जिते वरन को रूप वह लघु गुरु धरे निसंक
६६॥ दल न ते दल न वार प्रस्न को वनें विषम करि से
क॥ संख्या प्रथम न अरध जुत आगे टरत न नेक॥ ६७
अथ उदिष्ट॥ सवैया॥ रूप तजो इक भेद को ऊ लिष
भाष भले कवरूप पाये के ने॥ तासु रेष जितो जिन सी
रै हरवे पक धरे पर दोने॥ हेक लपन के अंक जिते

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

भरतामितनसेष्यकंहूसजतोने॥वरनउद्दिष्टकीरीतिय
हीइकआनलघैलिषदैगुनजोने॥६९॥तोटक॥
लघुवेततरेकचिदोरधरैतिमअंतगुरूफिरएकद
रै॥कहूनगुरूफिरडूनफिरै॥गतिवामभलीमन
अंककिरै॥६९॥अथमेरुप्रयोजन॥एकादिकगुरु
लघुजितेरुपमेरुगतिजान॥पंक्तिपातिकोएकमि
लभेदसमुचेभान॥७०॥सोकमेरुयकसोदाउपुन
अरधखंडमिलचार॥रीतप्रथयकहनसभअनकीचहुत्र
लिषतविधचारि॥७१॥सवैया॥मेरुकोचक्रऔरहर
नकीविधिदोहूलनोकहजोचितभावै॥सोदृष्ट
छंदलिषैपरहरवफेरअथोविधएकबढावै॥वाघ
तअंकवरोवरपातजहरनकीगतियोकरिपावै॥दो
हूगहूडरधतेअथअंतहरैकरकेएकधरावै॥७२
भरेगितसद्भमेलिकैउरधनिजरागअंक॥रवलीत
जिफिरतथापसचमवलोनिसंक॥७३॥अथसोधपु॥
मेरुसोधकेचक्रमैभेदइतोकविराय॥तेदुद्दिकोनदुहि
उरवढयाकेइकदिसमाय॥७४॥अरधषंडगिरसंगते
रीतिअधकाकरदेत॥भरनविधीपुनसगमइकपाते
सोधसहेत॥७५॥एकादिदुहुंखंडसमसोधभरतकवि
केल॥प्रथमपातराकेधरैद्वतीसतटवतिमेल॥७६
धावप्रथिकपुनपुनभरैतजैएकअवसान॥त्रिस्पादिक
परीतियहसोधषंडपदिपदिचान॥७७॥सोधखंडअ
धरउधलषिपरहरवगीरजान॥प्रथमपातिकगि
लघुकीएकादिकगुरुआन॥७८॥एकादिकउरध

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

पसुजितेनि तेयामाह ॥ जितेजितेतरकांषंडगा जिगनिगमिव,
देकोचिनादि ॥ ८८ ॥ अथअर्धमेर ॥ लिषोसोधकीरी
तिपैउरधकोगहनएका ॥ अधअधहैहै समचलैलनोपे
भरतविवेक ॥ ८० ॥ ताकअौरएकेलिषोअथअध
हरनमीत ॥ वटैकौननहइगनलिषसमअगदमेहसी
ति ॥ ८१ ॥ क्रमव्यतक्रमकेपढनलहिएकादिकगुरुभेदं
इगनहस्अेकनगहिफिरपदैफिरपढचलैजिसेका ॥ सरद
गुरुकोआदिकरएकादिकसल ॥ नरवलहकोआ
गहीजवैपढैगोडल ॥ ८२ ॥ सोधरीतिउ ॥ अरधगिर
हरनकोरकरीत ॥ प्रथमपोतिएछेधरैधरैआनविसमी
त ॥ ८३ ॥ प्रथकमैलहुतषंडमेरसआदिएककोसाग ॥
त्रिस्पादिककेभरनकीअवहनीयेवडभाग ॥ ८४ ॥ पुनपु
निअेकमिलायकेअधंहअेतरकस्पाग ॥ भरीघोगतिमि
तिहूरधतजिहरअरधगिरभाग ॥ ८५ ॥ गिरगतिजेतेये
काउलगिहिहुगुरकेरुप ॥ इक इवाध्रजगतिहोतसभतति
एकेकविर्हुप ॥ ८६ ॥ अथषंडमेर ॥ इतेवरनगतिरुप
कहविनमेरकविराय ॥ एउदिकगुरलषनगतिमेर
रुषंडवर्नम ॥ ८७ ॥ प्रसनवरनमितउधाधरषेका
दिकेअेक ॥ व्यतक्रमक्रमउरधारधसमअा
गेसनेनिसेक ॥ ८८ ॥ उरधपोतप्राचीदिसाएका
वढतिषरका ॥ पूरवउरधतेउभैपरपरसनैविवेक
अधदअेकेभागसवलवधतहाइन्यास ॥ मेरभा
गकोपतिपरपेकादिगसभास ॥ ८९ ॥ गकारंतनउ
मेवलभेअथकइकाकेपरोवनाइ ॥ उरधउ

रश्रमास कहिदुन दुन गुरु लउ धार ॥९२॥ अथ अपसंख्या को कही
उरध अंक मिलाइ ॥ दुनि दुन करु रध रकत जै अर रहकतें आ
इ ॥९३॥ वरन सजाती षंड गिर षहषेड गिनत रूप ॥ जाति द्वै मेक
अंकत वदेत कवन के भूप ॥९४॥ इकरा का गहद घोर कैरो कां
रिकेटे अंक ॥ इह घ गत्ता गत अंत लों गल ता मान्य निहंक ॥९
अथ ध्वजा गयो जन ॥ रूप मात्र मसतां रकद मेरु जाति विना
ति ॥ ध्वजा करन तन अस्थान जुगा हती त्यों विख्यात ॥९६॥ अथ
चक्र ॥ उरध अंध गहतीन घर हरव पर्यंमित अंक ॥ मिंधम
पातको अंतगह्नि तजि मरलेउ निहंक ॥९७॥ जाती द्वै नव
कोवृते ताम्मै व्यस्त परीत ॥ मध्य जाति गिरपांतधगि अंतरू
विकामीत ॥९८॥ जाती द्वै नव गेर समर षो पिता कति ॥
ताम्मै घर गिर अंक समत त तन मूलीमांन ॥९९॥ वरुरद
ता का दुर्धल ठि अंक अौरम सता र ॥ मध्य मक्षों क मसता
रपुन लघन दुर्धउ धार ॥१००॥ अथ अंक भरन ॥ अंतपां
तके अंत को अंक जैनसो होर ॥ पुरा अंक तेवउ नकुसे
षपता का होय ॥१०१॥ इक ले हीरा का दिजवे नकी पें
न मीत ॥ रावंउ लवे रोह धर दूध ते अधरीत ॥१०२॥ जि
ते गुरु की पांति सरजितने मे लघ दाव ॥ कहि समया सता
तिजे ध्वज गति रेषवनाव ॥१०३॥ अथ पताका मसतार
दो ॥ मेरु पताका दुइ नमे नाद्ध कवट तजे जार ॥ याते गिरध्व
जदुइनको षैंचो कममसतार ॥१०४॥ जितेगुरु की पांत चर
जिते अंतधरवेक ॥ तेमकर को मेसैं जो लघुलिषसमका
वेक ॥१०५॥ लघु हरव गुरु आदि नन लघु दीजी येनाय ॥
आदिरूप जब फिरमिलेव हि अंत दैजाय ॥१०६॥ जि
ती पताका जितन को इम दीजे मसतार ॥ मत ध्वजा

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१ पदीविधलीजेतातविचार॥१०७॥अथमरकटी॥षटकेस
18 ८ अधदूँथलिषकरनरहसुनसार॥अथअपोनअरविंत
मोदुतीमेटनिरधार॥१०८॥त्रितअेदगुरूचलरथीमरी
एफोनसजान॥सारधपैऊरधमरोचारधअधदूअष
ज्ञान॥१०९॥दुत॥अष्टफोनलिषऊरधअधवरहरवसि
तअेव॥अथअफोनमेंत्रितअंदुतीचारचंकनिसंक॥११०॥
भेदअरधउरवेनलिषतितनेईलघुवेत॥भेदत्रित
गुनचारधकरिसरवगुरूवदरंहैत॥१११॥सरवलघु
लिषतितेईकलात्रिगुरणाकरतान्हि॥वालाअरधल
षिपिंडअधजाननतसवकवनाहि॥११२॥अथउपजाति
[illegible]मसतार॥पदउपलछ्यकेरवरविसरलव
कसंकेत॥चतरवरणमसतारकरआदअंततनजदेत॥
११३॥वेदछंदउपजातिहैलषोचतुरदसरूप॥एकापो
नमेचतुरदलजानतजेकवभूप॥११४॥इतिश्रीमद्रा
मदासजीविरचिताछंदरत्नावलीवरणप्रसतारनष्टो
दृष्टसेष्यो॥सूचीगिरधजामरकटीसएकारोततरवर
ल णाअष्टमेयो[illegible]नामप्रथमदलः॥समाप्तः॥१॥
अथमात्राप्रकरणविधि॥ ॥विघनहरनकोश्रीपाकर
वरनतमतपरकार॥अष्टदीतिउपाइहैसरवयथाति
सार॥११५॥अथप्रसतार॥जितीमत्रप्रसतारकरचअरध
दीर्घलिषलेह॥सकलाजोविसममेवामअौरधरदेय॥
११६॥मधमदीर्घतरलघुधरपरऊरधपरअंक॥सेस
वाममलिषगुरूलघुसमवयथानिसंक॥ ॥दून:॥आदि
गुरूतरलघुधरेजोजिहराँदीर्घ॥ताहितरेदकउर
किसंसममत्रमितिदीर्घ॥११७॥जगलऊतरलिषमत्र

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

गि॰राकलदूलदुलेख॥ इरत्यौपरउरलिखोपूरउरध्धकी
रेख॥११९॥ अथसंख्या॥ अथसंख्याप्रस्तारगतिमत्तकी
सुनलेहु॥ एकदोयप्रथकत्रितीलिखपरपरंजैसेदेहु॥१२०॥
द्वैद्वैहरवपांतजुकपरपरलिखोनिसंक॥ अंतमत्तसंख्यामे
रहींदेहैउदिष्टीअंक॥१२१॥ एकमत्तकोभेदइकदुइक
गुरुकैद्वैजान॥ इनहीकेगुनहीनजुकपरपरसंख्यामान॥
१२२॥ उरकेभेदनकोदुगनकरहरवविसममिलाय॥
१ धरंसममत्तभेदद्वैतीचविसमरहीजाय॥१२३॥ वेदेषु
रागरसवेत्तभेदीजैजवैघटाइ॥ तेसमभेदमध्यविसमकेइ
भयमध्यधराइ॥१२४॥ चौपई॥ प्रथमएकपरदुगनध
टावै॥ वेदेदुगनकरएकघटावै॥ सेसदुगनतेधरेनिवास॥
अथपरसंख्यालघ्याप्रकास॥१२५॥ धातिविषमकोदुग
नकरीजै॥ हरवजुतकरपरधरदीजै॥ संख्यापरेविसम
कीभई॥ मध्यपोतसमकोरहगई॥१२६॥ दो०॥ वेदैवि
समतवअंतमेकीजैतजिघीनहीन॥ सेषमध्यप्रतिषदी
जियेसमसंख्यवढदीन॥१२७॥ पुन:॥ चौ॰॥ प्रथमएककौं
दुगनधरावैं॥ दूतपददुगनकरिएकघटावै॥ सेसदुगन
तेधरेनिवास॥ अथपरसंख्यांकरोप्रकास॥१२८॥ दो०॥
अंतविसमकोदुगनफिरअगर्धाविसमकरहीन॥ सेस
लिखोपरदुगनपरहरवसममक्षकीन॥१२९॥ अंत
अंतकोदुगनकरविसमरहसमपहिचान॥ पुराविसम
समदुनकरपरिलिखदेनसुजान॥१३०॥ अथनष्टम:
विनारूपदीहरूपकोजोपछ्यानकरदेत॥ नष्टादीकेमध्य
तेरूपप्रगटकरदेत॥१३१॥ अममकरूपपाइतकोवै ॥१३२॥
होकतेसनाइ॥ लघुमइ॥ लिखतित्तीसयसंख्यासीर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१९

प्रस्तर संख्या को अंत तजि सेष बचत जे अंक ॥ तितने मत्त सरीष प
हे थोंअंक वे संक ॥१३३॥ अरु जुगपाके सेष धिके अंतसे छट्टे
अंक ॥ परे मतैं सकलन करि तिन जिन वे कनिसेक ॥१३४॥ अ
थ मात्रा उद्दिष्ट ॥ मत्ताव्रितको रूप रकजो लिषि सख्यात को र
तरहुँ संख्या को प्रगट तकर्हि ललघु उद्दिष्ट है सो र ॥१३५॥ रेष नसि
र हे संख्या कहै ता मै कछु विचार ॥ लघु बनके तो सीस हुउरुदध
उरुदध धार ॥१३६॥ उरुसीसन के अंक सब दीजै अंतनघटाय ॥
वर सेसं संख्या मित तसंधी जैव नाय ॥१३७॥ अथ मात्रा पताल ॥
लघु गुरु जेते छंद गंत रूपघत को र उताल ॥ विन मत्त ता रु
प्र रकटीत तघिन करुत पताल ॥१३८॥ अथ चक्र ॥
उरुदध अध मैको रुद्र रूपमत मितजान ॥ उरुदध अध वि
स्थो कको मध्य संख्या फिर ठान ॥१३९॥ वामको सानि जउ
रुदध गरु पात पुरा ग्रह होय ॥ त्रितीपा तिर म रूपकवत लघु
गुरु संख्या होय ॥१४०॥ भेद तनै ग्रहिल लघु गिह्न रूप गुरु
जान ॥ अपने भेद को लघु जो परको गुरु बषानि ॥१४१॥
अथ मेरु चंक्र ॥ चौ० ॥ प्रथम दो गरु लघु के जाने ॥ प्रथम
पंगत अथ द्वै कोठा नो ॥ उरुध तें रु अंक अंक वा ठे ॥ मेरु कौ
अथ न दैउ रिय का ठे ॥ सो अध रूप तें चौर कउ दिह को ने ॥ का रज
रत प्रथक परु दोने ॥ अरु ध मेरु गन्हि अरुध सजान ॥ ब
उ मेरु रूप पांत पछान ॥१४२॥ अथ सोगमात्र मेरु ॥ सवैया ॥
कउ बंधा [illegible] तम तलो मेरु रचो परफेर कछु भरिवे मैं परे ॥
अगर षन चौंत के गोर हवे ल षिपाते हरे कमैराकधरे
सन हर वद्दु विधि जे दगुनी नाल च्यो अथ लो व विव
र कैरे ॥ सम पांतन मूलन राठे धरे जुगउरुध जोर भरो
उतरे ॥१४३॥ दो० ॥ सम मूर तिकगरु अलन को विसमस

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

धिकलहुराका॥ एकादिकगुंनलहुलछअभाहोनरनगिदेव
१४४॥ अंकागनैगयहसननकेथितताउ लेउ परछानको
ना॥ जोरधरै अधतै कनके गरहरवतपौ परतेपरमौना॥
छोड अदीहनके गरह अंत मेदासव्वतिकमलेगहिनोना।
१४५॥ दो॥ सोधमरनकीगति पदी भावनसथकविराय॥
प्रथमअपातिराकै धरोपरपरमेरंभाय॥ १४६॥ पुनः षंड
मेरु॥ कलाअरधमित्रअ धरैकरैकेकोधरअंको॥
तोहविसमरक अधकतोरीजैसागनिसंक॥ १४७॥ द्रु
रधसेष्या अध अंध द्वै द्वै वारमिलाइ॥ समभेलेभन
विसममेएकाअधिकविलाय॥ १४८॥ द्वै द्वै वारमिलै
पवैरकतजधैरै निसंक॥ विसममिलैरकवेरहीअ
हीमिलतनअंक॥ १४९॥ अंकसेधजव अंतलौवहीवे
दगिरपाति॥ एकाजतिकगिन अंतलौ एकादिकगुरुभो
ति॥ १५०॥ अथसोधषंड॥ षंडमेरुसमरहताउसोध
षंडकवराय॥ एकादिकगुरुरूपसभरकु [illegible] कषंडल
षाय॥ १५१॥ चौ॥ प्रथमपंगति एकै अंका॥ अथकथ्या
पिडुनमेलति संका॥ उरधतेअध अध रमिलावै
अंतएकजहं द्विलीभरावै॥ रस्यादिकमे हीतगिन अं
त॥ पुनपुनमेलभरैपरपंत॥ आदिषंडसवलघु
कोजानो॥ एकादिकगुरुअनपिछानो॥ १५२
जागतजेते एकाउगिते गुरुकेरूप॥ रकारकोध
जगतिहोत तेपेक छोरकवम्हप॥ १५३॥ अथ
मात्रापिताका॥ दूरधअधगरह [illegible]
[illegible] तीनपंचिपरपरमतानुसार॥ अंतएकअरु [illegible]

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

चौरवे॰ प्रथमा प्रथम संधार ॥१५४॥ जातीहै तक अं
के रर रं रके र खंबधान ॥ वामरीति यक अंक लीम
धखंड गिरमान ॥१५५॥ तिसतिर अथ धर अंक री
र धैके विन कविराज ॥ तिनी पांति दे बांदै सम जपि क
ताका साज ॥१५६॥ जातीहै तक गेह मिति छे चपि
ताका मीत ॥ तामै अंक गिर अंक मत तत तम तीरि
ति ॥१५७॥ अंक औरम सतार मै दुधागितकाजा
म ॥ भरनरीत तजो रन मै वदीम जमे मान ॥१५८॥
एवदोय त्रितीपार के सोध अंतको अंक ॥ ज
हंल गिपावै जिते मिलि धरे मित पुजानि सक
१५९ ॥ अथ मा मामरकटी ॥ दो॰ ॥ उरध अधलि
खि अष्ट गृह परपर वत्तानुसार ॥ मरवमरकटी
a भरन विधअं सुनी दे निरधार ॥१६०॥ वित्तभेदल
घु वेत्तगुरु सव लग कलपिंडान ॥ पूरति पंगति
मपहि सुरगिजिपद वोन ॥१६१॥ मध्यमवृत्ति
दारभेद फिरपति तीम लमै एक ॥ ल्यागे सूची अंब
रै च तरध आन विवेक ॥१६२॥ मध्य मसूनधर
एक फिर पुन सूची कीरीत ॥ इक धर मध्यमो पं
च मी परपर औररहीति ॥१६३॥ निज ऊरधअ
रधपुरा गीह निजहू रवहु लेह ॥ पूरपांगिर
मच ठीत व मध्यमें विंदु धरेह ॥१६४॥ पांजउरध
की परधरो हरवगुरु वहजान ॥ द्वित्यभेद गु
नकला धर पिंड अरध गतिं इठान ॥१६५॥ इति
श्रीमन्मदनदास विरचिते छंदोर्वेलीमो ज्ञामसतातादिप्र
ष्टप्रस्तयो नाम द्वितीयस्तलः ॥ २ ॥ रा म ॥ राम ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

॥ अथ मकारांतर अष्ट मरुपः ॥ सोरठा ॥ मरु तारादि क
जैत मकारांतर पुन कहे ॥ कविविनोदके हेत वृत्त म तो
तरस मरु दीजे ॥ १६६ ॥ भेदवि परजे वरन तें संख्या विधि
यह होत ॥ नष्ट उदिष्टा तथा विधि मुन मति करत उदोत ॥
१६७ ॥ दो० ॥ प्रथम वरन मरु तार कें भजमता अवरोह क
म ॥ पुन आरोह मकार संख्या ख्यात क्रम नाह यह ॥ १६८
भुजंग मत्तें अवरोह क्रम यथा ॥ प्रथम गुरु तरि लघु
रे ॥ पर ऊर्ध्व धर अंक ॥ सेष वाम दिस गुरु रूप रो सब लोनि लघु
रसंक ॥ १६९ ॥ अथ पकुं भजमतें आरोह यथा ॥ प्रथम ल
घु सिर गुरु रूप रो पर अध ऊर्ध्व धरे ब ॥ सेस वाम दिस ल
घु धर सब लघु लो देख ॥ १७० ॥ अथ पकुं भगण गुरु ल
घु रस थिती व्यत्यय सब गुरु तें अवरोह यथा ॥ अं
त गुरु तर लघु धरै सब ऊर्ध्व धरीत ॥ सेष सख्या दिस
गुरु धरै सब लघु लो मीत ॥ १७१ ॥ पुनः तथा रोह यथा
अंत लघु तर गुरु रूप रो पुर व जगत अवरोह ॥ सेष
लघु पर च मलिखो सब गुरु तक जो य ॥ १७२ ॥ अ
थ भेद गति सेष ॥ वि त्यय सब लघु तें अवरोह कं य
था ॥ आद लघु तर गुरु धरो पर पर ऊर्ध्व धांत ॥ से
ष लघु लिखि वाम गे सज रु लगो सगुरु भाति ॥
१७३ ॥ पु० आरोह यथा ॥ पुरा दो ह सिर लघु लिख
पो अधकीरेख ॥ सब गुरु लो ख सेष को सब लघु
लग देख ॥ १७४ ॥ अथ गुरु लघु स्थिती विनय सर
व लघु तें अवरोह यथा ॥ अंत लघु तर दीह पर ह
र ऊर्ध्व धरीजे ॥ [illegible]
[illegible] ॥ सेष गुरु रूप सब चमलिखो सर

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

इतिनष्टम॥अथउद्दिष्टकथनं॥लिखेरूपक्रोरेषसिरसंख्या
धरततकाल॥दीक्रअंककतअभेदकीभाषोसेऊतार॥जो
रूपतज्यारोहक्रमताकोकिमिनिरधार॥तौलघुसिरखे
अंककतजयामेपक्षीविचार॥१८५॥अथगुरुलघुरूपस
तीविस्तरसबगुरुतेअवरोहउद्दिष्टम्॥अतिक्रमसंख्या
सीसधरगुरुसिरअंकमिलाय॥रितभेदमैतजकवी
सेषरूपवदभाय॥१८६॥अथस्थारोहउद्दिष्टम्॥जोरू
पतजअरोहक्रमपागतमैकविराय॥तौलघुसिरक
अंककतजसेसरूपवतलाय॥१८७॥अथपरंपरागतसं
ख्याबतसबलघुतेअवरोहउद्दिष्टम्॥क्रमतसंख्या
सीसधरलघुसिरकेगहिअंक॥रितदेभेदमैऊनकरभा
षोसेषनिसंक॥१८८॥पुनः॥अस्थारोहउद्दिष्टम्॥
जोरूपतज्यारोहक्रमताकोतरजवताय॥गुरुसी
सकेअंकगहिदीजेभेदघटाय॥१८९॥अथसर
बगुरुलघुस्थितोविस्तरसबलघुतेअवरोहते
उद्दिष्टम्॥अतिक्रमसंख्याअंकधरगहिलघुसिर
केअंक॥रितभेदमैऊनकरभाषेरूपनिसंक॥१९०
पुनः॥अस्थारोहउद्दिष्टम्॥पक्षीरीतिअरोहक्रम
गुरुसिरअंकमिलाय॥परेभेदमैऊनकरदीजैरूप
बताय॥१९१॥इतिवरणउद्दिष्टम्॥अथमात्रागसा
दिमतेमात्राप्रस्तारादिकथनम्॥अत्रसुधरे
क्रम॥दो०॥प्रथमदोयतरलघुधरपरगुरुधपरअं
क॥सेससवामासिषिगुरुलद्दसमवयथानिसंक॥
१९२॥पुनः॥सुधारोह०॥लघुउपादकेसीसगुरु
परलघुउपधरसा॥जोलघुपरानलघुमितौगु

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

२१

गुरु लघु मीत॥१७५॥ कुं॥ अथ मात्रोदिष्ट रूप॥ अंत तें
दुसिर लघु लिख पर पूरा अंध अंक॥ सेस मत्त रूप सं
ख्यम लिखो सब कल पके नि रेख॥१७६॥ इति मात्र
॥ अथ अगम तागि मात्रा अवरोदि नष्टम॥ जिर
जिर गिर रको अंक गदि घटे हैं सबको अंक॥ तिर तिर
तरकी रेष को कल जो न बेक॥१७७॥ अथ मात्रो
देनष्टम॥ जो हत पूछे मात्रारोदि क्रम मम को रूप बताय॥ तब
गुरु लिख लघु को जिये संख्या अंत घटाय॥१७८॥ अथ
पाग लघु स्थिति विसय पसर वगु रते अवरोदि नष्टम
सबत लिखि लघू रक सं संख्या विसय आन॥ से संख्या अ
त घटा रहे के को जे वे कसजान॥१७९॥ पुनः॥ तस्मारोदि
नष्टम॥ दृष्टवरन मिति लघु लिख संख्या विस क्रम
देय॥ म मनमा उ इक ऊन कर सोध वं के करि लेय॥१८०
अध मेय गत संख्या विसय सर्व लघु ते अवरोदि
नष्टम॥ दृष्टवरन मिति गुरु धर स्थिर संख्या क्रम
दीजि॥ इते भेद लख उ विन धल गरर गेल लघु लि
खमो त॥१८१॥ अथ सप्तारोदि नष्टम॥ जो हत पूछत
को ऊ प्रचर ते पागंति मैं र ककरू प॥ तो लघु लि
खत जिन प्रमके करो गुरु रक व रूप॥१८२॥ अथ
पमेद गत संख्या गुरु लघु स्थिति विसय सर
लघु ते अवरोदि नष्टम॥ ॥ दृष्टवरन मित गु
रु धर सो संख्या विसय क्रम देय॥ गिर तुये द मैं मस
त ज सोध लघु लिख लेय॥१८३॥ पुनः॥ अथ सप्तो
दे नष्टम॥ पालिगत मै अध रते हु धन तको अंक
का॥ लघु लिखि गुरु बनार दे पा मैं यनि विवेक॥
जौ

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

ष्टितनष्टम॥ अथउद्दिष्टकथनम्॥ लिखेरूपकोरेखसिरसंख्या
धरततकाल॥ दीजुअंकतजभेदकीभाखोसेसउताल॥ जो
रूपतजआरोहक्रमताकोकिमिनिरधार॥ तोलघुसिरके
अंकतजयामेयकीविचार॥१८५॥ अथगुरुलघुरूपथ
तीविधपसारवगुरुतेअवरोहउद्दिष्टम॥ अतिक्रमसंख्या
सीसधरगुरसिरअंकमिलाय॥ रितभेदमैतजकवी
सेषरूपवदुभाय॥१८६॥ अथआरोहउद्दिष्टम॥ जोरू
पाततआरोहक्रमयागतमैकविराय॥ तोलघुसिरके
अंकतजसेसरूपवतलाय॥१८७॥ अथपूर्वगतसू
च्याव्रतपसारवलघुतेअवरोहउद्दिष्टम॥ क्रमतेसंख्या
सीसधरलघुसिरकेगहिअंक॥ रितदतमैउनकरभ
च्योसेषनिसंक॥१८८॥ पुनः॥ अथआरोहउद्दिष्टम॥
जोरूपतजआरोहक्रमताकोतररनवताय॥ गुरुसी
सकेअंकगहिदीजैभेदघटाय॥१८९॥ अथप्रस्तार
वगुरलघुसिथितीविधपसारवलघुतेअवरोहते
उद्दिष्टम॥ व्यतिक्रमसंख्याअंकधरगहिलघुसिर
केअंक॥ रितभेदमैउनकरभाषेरूपनिसंक॥१९०
पुनः॥ अथआरोहउद्दिष्टम॥ पढीदीतिआरोहक्रम
गुरसिरअंकमिलाय॥ पेरभेदमैंऊनकरदीजैरूप
वताय॥१९१॥ इतिवरणउद्दिष्टम॥ अथअगमसा
दिमतेमात्राप्रस्तारादिकथनम॥ अत्रसूची
क्रम॥ दो॰॥ प्रथमदोइतरलघुधरपरऊरधपरअं
क॥ सेससबमालिखिगुरलहसंभवयपानिसंक॥
१९२॥ पुनः॥ सूचारोहः॥ लघुउपादकेसीसगुरु
पेरनाधऊअधरख॥ जो लघुपरानलघुमितोगु

रुधरे पोलघुटेब॥१९४॥प्रथम धरे के लघन मै जगण इक को
ते वग न नै। अदी पगुरुअ ल घ से म ग लौ फिर जान॥१९५
अथ सरवगुरुते गुरु लघु स्थिति विस्त .. तो दूयथा॥
अंत गुरु तन लघु धरे रूप वहूर धरे ब॥ सेस लिखौ पंच
म गं ला सब लघु लौ अरेब॥१९५॥ अथ सरव लघु ते अ
दो दूयथा॥ लघु उपांतके सी स गुरु पुरा पुरतानी दीजि
से स तिषोप सच म ग ला सब गुरु लो न षमीत॥१९६॥
भेदंगं न से ष्या वित्र पय सरव लघु ते अवरोद्द यथा॥ लघु
उपादतं गुरु रूप धरप सच म ऊर धरेब॥ सेसं वा स ग
लसम कलि खि सरव गुरु लगि देब॥१९७॥ पुन: अ
स्पा दो दूयथा॥ प्रिय म गुरु सिर लघु धरै पचम अध
को रूप॥ सेस वाम लिख उ वित गल सब लघ लग क
व मप॥१९८॥ अथ से ष्या लघु गुरु सर्ष्पि तीव भाव
त्पय सरव लघु ते अवरोह क्रम॥ लघु उपांतत र
गुल घुरे रूप वहू पररेब॥ सेस लिखो गल यथा कछु
अत गु हं गु देब॥१९९॥ पुन॥ अस्पा दो दू यथा॥
अंत दो दू सिर लघु इक रूप अव के अंक॥ पसव
म लिख गल से स हो सब लघु लौ जिरसंक॥२००॥
इति मरुतार:॥ अथ आगम्यादि मतेन नष्टम॥ छं
द मत्र मिति लघु लिख से ष्या क्रम सिर देय॥ मत्र
अंक तन जिसे सजो ता की फिर सुध लेय॥२०१॥ जो
दूजद्द पावे सोध के अंत सेष के अंक॥ पर कल
सो सेष कलौं के फल हत नद्द वे कनि संक॥२०२॥ पुन:
अस्पा दो दू: नष्टम॥ मत्र अंक को मै इकत जो सेस
अंक सोध वार॥ जह। धरै आरो दू क्रम पथमि

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

राठेकठनाय॥२०३॥ अथगुरुलघुक्षितीवित्पथ
सरवगुरुतेआरोहैनसरस॥ मतमत्त मितलघ
लिषसेष्या...कमदेय॥ मत्तअंतमैऊनठारमित
सरवगुरुगेय॥२०४॥ पुनः॥ असहारोहैनष्टम॥ मत्त
अंकवाएकूनकरतेषसेभोरचित्र॥ जहांघटैआरोह
कमसरवगुरुगुरुमित्र॥२०५॥ अथमेरुगतसंष्या
वित्पथसरवलघुतेआरोहैनष्टम॥ समनत मत्त
राकूनकरतेषसोधसवअंक॥ ताहतननतरलघ
नेपरसोमिलहैबेक॥२०६॥ पुनः॥ आसारोहैनष्ट
मत्तअंकतजअंतमैसेसमतलघकीरेष॥ पाऊत
बेकवनारेएकमआरोहकदेष॥२०७॥ अथसंष्या
गुरुलघुक्षितीऊमैवित्पसरवलघुतेआरोहैनष्ट
॥ मत्तअंकयेकूनकरहोषविचारसजान॥ ततल
ननतरलघुजेसरवमिलिगुरुजान॥२०८॥ पुनः॥ अ
सारोहैनष्टम॥ अंतथेरमैमत्ततजसेमतकीरे
ष॥ सरवमिलिगुरुकीजीयेरहैआरोहविसेस॥२०९
रतिनष्टम॥ अथउद्दिष्टम॥ कुंभजादिमत्त॥ दो
गुरसीसनकेअंकसवदीजैअंततघटाइ॥ सेस
अंकमिगिनसुधीनवभावतरूपवनाइ॥२१०॥
पुनः॥ असारोहउद्दिष्टम॥ रहैरूपआरोहक्रमरूप
नकोकविराय॥ सेककरोगुरुअंककेदीजैवदी
वताय॥ अथगुरुलघुक्षितिवित्पसरवगुरुते
आवरोहउद्दिष्टम॥ रूपतक्रमसंष्यासीसधरअं
ततजोगुरअंक॥ सेसरहैकोलभ्यैकेभावोमेरनिसंक॥२११

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

23

पुनः अस्यारोहउदिष्ट ग। यदी रितज्या। ...। पसैककरे। उलंगेक
वरुसंख्यारूपकीकवजनकरि तानिसंक॥१
अथ मेरुगगी संख्यावित्यपरव लघुतेअवरोह॥ उदि
ष्टम॥ गुरुसीसनकेअवरै दीजेएक मिलाय॥ तिहसंख्या
मितभांतयोंकवजनरूपबनाय॥२१२॥ ... सारोहनष्ट
गुरुसीसनकोजुतजोये अवसान॥ सेषसंख्यामितिलप
कउगजिअरोहवषान॥२१३॥ अथसंख्यालघुगु
रुप्रितिउभवित्यस्रव लघुतेअवरोह उदिष्टम॥ अ
नुक्रमसंख्यासीसधरगुरुअंककरएकमेल॥ जितनेहैव
रुरूपं लघकरत कवीसुरकेलौ॥२१४॥ पुनः॥ अस्यारोहव
रुहैहोत आरोहक्रमसनानतजेकवजान॥ गुरुसीसन
केअंकको नवतजीये अवसान॥२१५॥ इतिमात्रा
गकरणम॥ अथवरणगणोदिष्ट रूपोदाहरण
णम॥ अथ अंगसप्तादिमते अवरोहनष्टे त्रतीया
येरूपः॥ [ऽ।ऽ] पुनः आरोहेनष्टे पंचमः [।।ऽ]
अथगुरुलघुदरसायितीवित्स संख्यावित्सपसरव
गुरुतेअवरोहेनष्टेचतुर्थोयेरूपः॥ [ऽ।।] पुनरा
रोहेनष्टेषष्टमोयेरूपः॥ [ऽ।ऽ] अथयेअरगजस
ख्याचित्यपसरवलघतेअवरोहक्रमेनष्टे यरु
रूपः॥ [ऽऽ।] पुनः आरोहेनष्टेत्रितीयःयरूपः [ऽ।ऽ]
...रुप्रिति वित्स ...सा वित्सा पसरवलघु
अथगुरुलघुतेंअवरोहक्रमेनष्टे सप्तमोरूपः
[ऽऽ।ऽ] पुनः॥ आरोहेनष्टेद्वितीयः॥ [।।ऽ] इतिनष्टो
दाहरणानि॥ अथ वर्णोदिष्टोदाहरण॥ अत्र
यंकुअंजमतेअवरोहक्रमोदिष्टोत्रितीयोरूपः
[१ २ ४ ८ / ऽ । ऽ] पुनः॥ आरोहउदिष्टे अष्टोरूपः [१ २ ४ ८ / ।ऽ ऽ]
अथगुरुलघुदरसायितीवित्सपसरवगुरुतेअवरोह

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

23

क्रमोद्दिष्टे सप्तमो रूपः॥ [॥ १ २ ४ ८ ऽ] पुनः प्रस्तारे उद्दि-
ष्टे सप्तमः [१ २ ४ ८ ऽ। ऽ] अथ भेदगतसंख्यादिस्य सर्व-
लघुते प्रस्तारे क्रमोद्दिष्टे त्रितीयो रूपः [१ २ ४ ८ ।ऽ ऽ]
अथ गुरुलघुस्थिति विस्यपर्वलघुते प्रस्तारे क्रमो-
द्दिष्टे द्वितीयो रूपः॥ [१ २ ४ ८ ऽ । ऽ] इति वर्णोद्दिष्टम्॥
अथ समस्तानां चक्रोद्धारः॥ [॥ १ २ ४ ८ ऽ]

अथ कूटमवे	अथ उद्दिष्टे स्थिति तथा प्रस्तारे	अथ भेदगतसंख्या विस्यप्रस्तारे	अथ गुरुलघुस्थिति प्रस्तारे	अथ वर्णप्रस्तारे
ऽऽऽ	ऽ ऽ ऽ	। । ।	। । ।	ऽ ऽ ऽ ऽ
।ऽऽ	ऽ ऽ ।	ऽ । ।	ऽ । ऽ	। ऽ ऽ ऽ
ऽ।ऽ	ऽ । ऽ	। ऽ ।	। ऽ ।	ऽ । ऽ ऽ
।।ऽ	ऽ । ।	ऽ ऽ ।	। ऽ ऽ	ऽ ऽ । ऽ
ऽऽ।	। ऽ ऽ	। । ऽ	ऽ । ।	ऽ ऽ ऽ ।
।ऽ।	। ऽ ऽ	ऽ । ऽ	ऽ । ऽ	। । ऽ ऽ
ऽ।।	। । ऽ	। ऽ ऽ	ऽ ऽ ।	। ऽ । ऽ
ऽ।।	। । ।	ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ	ऽ । । ऽ
				। ऽ ऽ ।
				ऽ । ऽ ।
				ऽ ऽ । ।
				। । । ऽ
				। । ऽ ।
				। ऽ । ।
				ऽ । । ।
				। । । ।

अथ मात्रानष्टोद्दिष्टादिउदाहरणम्॥ तत्र मा-
त्रानष्ट षट्मात्रागतवृत्तं भजमते प्रस्तारे
प्रथमो रूपः॥ [१ २ ३ ५ ८ । । । । ऽ] पुनः प्रस्तारे नष्टे पंचमः
[१ ३ २ ५ ८ ३ ऽ ऽ । ।] अथ सर्वगुरुस्थिति
विस्य प्रस्तारे के पे नष्टे त्रितीयो रूपः॥ [ऽ । ऽ] पुनः
प्रस्तारे नष्टे पंचे त्रितीयः [।।। ऽ।] अथ भे-
दगतसंख्याविस्यप सर्वलघुते प्रस्तारे नष्टे पंच-
मो रूपः॥ [ऽऽ।।] पुनः प्रस्तारे नष्टे पंचमः [ऽ।।।]
पुनः प्रस्तारे नष्टे पंचमः॥ [ऽ।।।] इति नष्टम्॥ उद्दि-
ष्टम्॥ अथ कुंभजमते प्रस्तारे क्रमोद्दिष्टे चतुर्थो
रूपः [ऽ।।ऽ] पुन प्रस्तारे उद्दि पंचमः [ऽऽ।।] अथ गु-
रुलघुस्थिति विस्ये सर्वलघुते भेदगतसंख्यादि
प्रस्तारे उद्दिष्टे पंचमो रूपः [ऽ।।।] पुनः प्रस्ता-
रे उद्दि त्रितीयः [।।ऽ।] अथ सर्वलघुते

पुनः प्रस्तारे उद्दिष्टे त्रिती [। ऽ।ऽ ४८] ३

पुनः प्रस्तारे उद्दिष्टे द्वितीय रूपः [। २ ४ ८] ५

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

24 वै

त्येकमावर्तोद्दक्रमउद्दिष्टे पंचमः॥ रूपं॥ [।।ऽऽ] पुनःस्र
सांदोद्देउद्वितीयः [ऽ।ऽ।] इतिउद्दिष्टम्॥ अथपंप्रस्
तारस्यचक्रादिउदाहरणंतत्रमात्रास्वकी

१	२	३	४	५	६	७	८	वृत्त
१	२	३	५	८	१३	२१	३४	संख्या
०	१	२	३	५	८	१३	२१	सूची

अथषट्मात्राप्रस्तारः

ऽऽऽ	ऽऽऽ	।।।।।।	।।।।।।	ऽऽऽ
।।ऽऽ	ऽऽ।।	ऽ।।।।	।।।।ऽ	।।ऽऽ
।ऽ।ऽ	ऽ।ऽ।	।ऽ।।।	।।।ऽ।	।ऽ।ऽ
ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	।।ऽ।।	।।ऽ।।	ऽ।।ऽ
।।।।ऽ	ऽ।।।।	ऽऽ।।	।।ऽऽ	।ऽऽ।
।ऽऽ।	।ऽऽ।	।।।ऽ।	।ऽ।।।	ऽ।ऽ।
ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	ऽ।ऽ।	।ऽ।ऽ	ऽऽ।।
ऽऽ।।	।ऽ।।।	।ऽऽ।	।ऽऽ।	।।।।ऽ
।।ऽ।।	।।ऽऽ	।।।।ऽ	ऽ।।।।	।।।ऽ।
।ऽ।।।	।।ऽ।।	ऽ।।ऽ	ऽ।।ऽ	।।ऽ।।
ऽ।।।।	।।।ऽ।	ऽ।ऽ।	ऽ।ऽ।	।ऽ।।।
।।।।।।	।।।।ऽ	ऽऽ।।	ऽऽ।।	ऽ।।।।
	।।।।।।	ऽऽऽ	ऽऽऽ	।।।।।।

इतिकुंभ नमतेत्अव रोहारोहण म	अथगुरु लघुस्थिति विस्तपश्च वेतहारोह	अथमे रुनस्थ [illegible] स्थापत्र रोहारोह	अथगुरुलघुस्थिति तेषांविस्तपश्चवप रोहारोह॥०॥

३ मे

इतिमात्राप्रस्तारादि॥ अथवर्णचक्रानितत्रप्रकृति

वृत्त:	१	२	३	४	५	६	७	८	
भेद:	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	२५६	
लघुवृत्त:	१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	
गुरुवृत्त	१	२	४	८	१६	३२	६४	१२८	
गुरुवर्ण:	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	
लघुवर्ण:	१	४	१२	३२	८०	१९२	४४८	१०२४	
कला	३	१२	३६	९६	२४०	५७६	१३४४	३०७२	
पिंड	१॥	६	१८	४८	१२०	२८८	६७२	१५३६	

इति अष्टपंक्तिप्रस्तारकोटी॥ राम॥राम॥राम।

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथः लसंगमेरु लिख्यते

१	१							२
१	२	१						४
१	३	३	१					८
१	[illegible]	६	४	१				१६
१	५	१०	१०	५	१			३२
१	६	१५	२०	१५	६	१		६४
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१	१२८

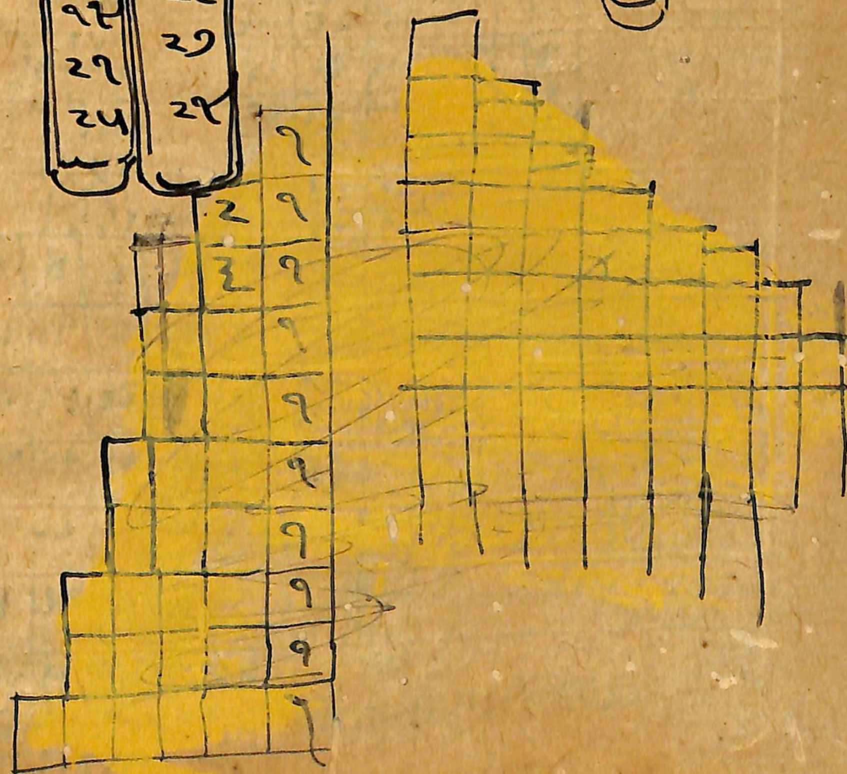
इति सप्तस्वरस्य संगमेरु॥ अथ पवरणसोप स्वरा

चास्वर तानी ध[illegible]जा

१	४	३	२	१	१
१	५	१०	१०	५	१
१	२	४	८	१६	३२
	२	४	८	१६	
	३	६	१२	२४	
	५	७	१४	२८	
	९	१०	१५	३०	
	१७	११	२०	३१	
		१३	२२		
		१८	२३		
		१९	२६		
		२१	२७		
		२५	२९		

स्वर मेरु

१	३	२	१	१
१	४	६	४	१
१	२	४	८	१६
	३	४	८	
	३	६	१२	
	५	७	१४	
	९	१०	१५	
		११		
		१३		



25

१					
१	२				
१	३				
१	४	६			
१	५	१०			
१	६	१५	२०		
१	७	२१	३५		
१	८	२८	५६	७०	
१	९	३६	८४	१२६	
१	१०	४५	१२०	२१०	२५२

इति नववरणध्वजामेरु

१	१						
१	२	१					
१	३	३	१				
१	४	६	४	१			
१	५	१०	१०	५	१		
१	६	१५	२०	१५	६	१	
१	७	२१	३५	३५	२१	७	१

इतिवरणस्य मेरुः सप
त वरणकः

६	५	४	३	२	१	
१	६	१५	२०	१५	६	१
१	२	४	८	१६	३२	६४
	२	४	८	१६	३२	
	३	६	१२	२४	४८	
	५	७	१४	२८	५६	
	९	१०	१५	३०	६०	
	१७	११	२०	३१	६२	
	३३	१३	२२	४०	६३	
		१८	२३	४४		
		१९	२६	४६		
		२१	२७	४७		
		२५	२९	५२		
		३४	३६	५४		
		३५	३८	५५		
		३७	३९	५८		
		४१	४२	५९		
		४९	४३	६१		
			[illegible]			
			५०			
			५१			
			५३			
			५७			

अथवरणस्य
षट्पांति मे
मर्कटी
...पजो प्रस्तार

।ऽऽऽ
ऽ।ऽऽ
।।ऽऽ
ऽऽ।ऽ
।ऽ।ऽ
ऽ।।ऽ
।।।ऽ
ऽऽऽ।
।ऽऽ।
ऽ।ऽ।
।।ऽ।
ऽऽ।।
।ऽ।।
ऽ।।।

इतीव
जाती
प्रस्तार

वरणनदी
की ध्वजा

१	२	१	१
१	३	३	१
१	२	४	८
	२	४	
	३	६	
	५	७	

इतिवरणचक्रांनि

१	२	३	४	५	६	ब्र.
२	४	८	१६	३२	६४	मे
३	१२	३६	९६	२४०	५७६	कं.
२	८	२४	६४	१६०	३८४	क.
१	४	१२	३२	२०	१९२	ग.
१	४	१२	३२	८०	१९२	ल.

इतीवरणसंख्यादिवरण
स्य ध्वजा इति वरणस्य
षट्प्रस्तारकटी

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

अथमात्राणांचक्रःउनातत्रमात्रा
[illegible] ॥ पात

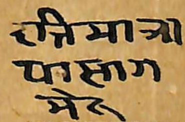
२२ घं	१	२	३	४	५	६	७	८
संख्या	१	२	३	५	८	१३	२१	३४
लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०

अथमात्रामरकटी

वित्त	१	२	३	४	५	६	७	८
भेद	१	२	३	५	८	१३	२१	३४
लघ्वंत	१	१	२	३	५	८	१३	२१
गुर्वंत	०	१	१	२	३	५	८	१३
लघु	१	२	५	१०	२०	३८	७१	१३०
गुरु	०	१	२	५	१०	२०	३८	७१
मात्रा	१	४	९	२०	४०	७८	१४७	२७२
पिंड	०	२	४	१०	२०	३९	७३	१३६

मात्रापाताल मेरु

१
१ १
२ १
१ ३ १
३ ४ १
१ ६ ५ १
४ १० ६ १
१ १० १५ ७ १
५ २० २१ ८ १
१ १५ ३५ २८ ९ १



अथमात्रायचंडमेरु ॥ तत्रैका
दसमत्तामेरु गतअष्टमछंद ॥
१।१०।१५।७।१। ३४

अथमात्रा
दामेरु

१
१ १
१ २
१ ३ १
१ ४ ३
१ ५ ६ १
१ ६ १० ४
१ ७ १५ १० १
१ ८ २१ २० ५
१ ९ २८ ३५ १५ १
१ १० ३६ ५६ ३५ ६

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

१३
26

अथ एकादस मात्राया सौद्ध स्वद्वितीयखंडः ॥

१।२।३।४।५।६।७।८।९।१०

इति मात्राया संख्य खंडमेरु ॥

अथ मात्राया ध्वजा

४	०	३	०	२	०	१	०
१	०	१०	०	१५	०	७	०
१	२	३	५	८	१३	२१	३४
१		२		५		१३	
		३		८		२१	
		४		१०		२६	
		६		११		२९	
		७		१२		३१	
		९		१६		३२	
		१४		१८		३३	
		१५		१९			
		१७		२०			
		२२		२३			
				२४			
				२५			
				२७			
				२८			

इति मात्राया पताका ॥

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative

CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative



CC-0 Panjab University Chandigarh. An eGangotri-Vaidika Bharata Initiative